Drishti IAS Presents...

PT SPRINT 2022

आधुनिक इतिहास

(जनवरी 2021 – मार्च 2022)

Detailed Explanation

Drishti IAS, 641, Mukherjee Nagar, Opp. Signature View Apartment, New Delhi

Drishti IAS, 21 Pusa Road, Karol Bagh New Delhi - 05

Drishti IAS, Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj, Uttar Pradesh

Drishti IAS, Tonk Road, Vasundhra Colony, Jaipur, Rajasthan

e-mail: englishsupport@groupdrishti.com, **Website:** www.drishtiias.com

Contact: 011430665089, 7669806814, 8010440440

उत्तर

1.

उत्तर: C

व्याख्या:

व्यपगत का सिद्धांत (Doctrine of Lapse):

- यह वर्ष 1848 से 1856 तक भारत के गवर्नर-जनरल के रूप में लॉर्ड डलहौजी द्वारा व्यापक रूप से पालन की जाने वाली एक विलय नीति थी। अत: कथन 1 सही है।
- इसके अनुसार कोई भी रियासत जो ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नियंत्रण में थी, जहाँ शासक के पास कानूनी पुरुष उत्तराधिकारी नहीं था, कंपनी द्वारा कब्ज़ा कर लिया जाता था।
  - इस प्रकार भारतीय शासक के किसी भी दत्तक पुत्र को राज्य का उत्तराधिकारी घोषित नहीं किया जाता था। अत: कथन 2 सही है।
- व्यपगत का सिद्धांत लागू करते हुए डलहौजी द्वारा निम्नलिखित राज्यों पर कब्ज़ा किया गया:
  - सतारा (1848 ई.),
  - जैतपुर, और संबलपुर (1849 ई.),
  - बघाट (1850 ई.),
  - उदयपुर (1852 ई.),
  - झाँसी (1853 ई.) और
  - नागपुर (1854 ई.)

2.

उत्तर: A

व्याख्या

- सुभाष चंद जन्म 23 जनवरी, 1897 को उड़ीसा के कटक शहर में हुआ था।
  - वह विवेकानंद की शिक्षाओं से अत्यधिक प्रभावित थे और उन्हें अपना आध्यात्मिक गुरु मानते थे। उनके राजनीतिक गुरु चितरंजन दास थे।
    - वर्ष 1921 में बोस ने चित्तरंजन दास की स्वराज पार्टी द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र 'फॉरवर्ड' के संपादन का कार्यभार संभाला। अत: कथन 3 सही नहीं है।
- कॉन्ग्रेस के साथ संबंध:
  - उन्होंने बिना शर्त स्वराज (Unqualified Swaraj) अर्थात् स्वतंत्रता का समर्थन किया और मोतीलाल नेहरू रिपोर्ट (Motilal Nehru Report) का विरोध किया जिसमें भारत के लिये डोमिनियन के दर्जे की बात कही गई थी।
  - उन्होंने वर्ष 1930 के नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया और वर्ष 1931 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के निलंबन तथा गांधी-इरविन समझौते पर हस्ताक्षर करने का विरोध किया। अत: कथन 1 और 2 सही हैं।
  - वर्ष 1930 के दशक में वह जवाहरलाल नेहरू और एम.एन. रॉय के साथ कॉन्ग्रेस की वाम राजनीति में संलग्न रहे।
    - हालाँकि राजनीतिक मतभेद के कारण उन्होंने बाद में एक पार्टी 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की।

3.

उत्तर: C

व्याख्या:

- भारतीय राष्ट्रीय सेना का गठन पहली बार मोहन सिंह और जापानी मेजर इविची फुजिवारा (Iwaichi Fujiwara) के नेतृत्त्व में किया गया था तथा इसमें मलायन (वर्तमान मलेशिया) अभियान के दौरान सिंगापुर में जापान द्वारा कैद किये गए ब्रिटिश-भारतीय सेना के युद्ध बंदियों को शामिल किया गया था। अत: कथन 1 सही है।
- सुभाष चंद्र बोस जुलाई 1943 में जर्मनी से जापान-नियंत्रित सिंगापुर पहुँचे वहाँ से उन्होंने अपना प्रसिद्ध नारा 'दिल्ली चलो' जारी किया और 21 अक्तूबर, 1943 को आज़ाद हिंद सरकार तथा भारतीय राष्ट्रीय सेना के गठन की घोषणा की।अत: कथन 2 सही है।
- साथ ही INA में सिंगापुर की जेल में बंद भारतीय कैदी और दक्षिण-पूर्व एशिया के भारतीय नागरिक भी शामिल थे। इसकी सैन्य संख्या बढ़कर 50,000 हो गई थी।

4.

उत्तर: C

व्याख्या

- सहायक संधि
  - लॉर्ड वेलेजली ने वर्ष 1798 में भारत में सहायक संधि प्रणाली की शुरुआत की, जिसके तहत सहयोगी भारतीय राज्य के शासकों को अपने शत्रुओं के विरुद्ध अंग्रेज़ों से सुरक्षा प्राप्त करने के बदले ब्रिटिश सेना के रखरखाव के लिये आर्थिक भुगतान करने को बाध्य किया गया था। अत: कथन 1 सही है।
  - सहायक संधि करने वाले देशी राजा अथवा शासक किसी अन्य राज्य के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने या अंग्रेज़ों की सहमति के बिना समझौते करने के लिये स्वतंत्र नहीं थे।
  - यह संधि राज्य के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति थी, लेकिन इसका पालन अंग्रेज़ों ने कभी नहीं किया। अत: कथन 2 सही है।

- मनमाने ढंग से निर्धारित एवं भारी-भरकम आर्थिक भुगतान ने राज्यों की अर्थव्यवस्था को नष्ट कर दिया एवं राज्यों के लोगों को गरीब बना दिया।
- वहीं ब्रिटिश अब भारतीय राज्यों के व्यय पर एक बड़ी सेना रख सकते थे।
  - वे संरक्षित सहयोगी की रक्षा एवं विदेशी संबंधों को नियंत्रित करते थे तथा उनकी भूमि पर शक्तिशाली सैन्य बल की तैनाती करते थे।
- लॉर्ड वेलेजली ने वर्ष 1798 में हैदराबाद के निज़ाम के साथ 'सहायक संधि' पर हस्ताक्षर किये। अत: कथन 3 सही नही है।
  - इस संधि पर वर्ष 1801 में अवध के नवाब को हस्ताक्षर करने के लिये मज़बूर किया गया।
  - पेशवा बाजीराव द्वितीय ने वर्ष 1802 में बेसिन में सहायक संधि पर हस्ताक्षर किये।

5.

उत्तर: C

व्याख्या:

- 19 दिसंबर, 1929 को भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस ने अपने लाहौर अधिवेशन में "पूर्ण स्वराज" या पूर्ण स्व-शासन का एक ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किया। अत: कथन 1 सही है।
  - कॉन्ग्रेस पार्टी द्वारा यह घोषित किया गया था कि 26 जनवरी, 1930 को भारतीयों द्वारा "स्वतंत्रता दिवस" के रूप में मनाया जाएगा।
- कॉन्ग्रेस पार्टी के अध्यक्ष रहे पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लाहौर में रावी नदी के तट पर तिरंगा फहराया। इस दिन को अगले 17 वर्षों तक पूर्ण स्वराज दिवस के रूप में मनाया जाता था। अत: कथन 2 सही है।
  - इस प्रकार जब 26 नवंबर, 1949 को भारत के संविधान को अपनाया गया, तो कई लोगों ने राष्ट्रीय गौरव से जुड़े एक दिन पर दस्तावेज़ को मनाना और लागू करना आवश्यक समझा।

6.

उत्तर: C

व्याख्या:

सहायक संधि

- लॉर्ड वेलेजली ने वर्ष 1798 में भारत में सहायक संधि प्रणाली की शुरुआत की, जिसके तहत सहयोगी भारतीय राज्य के शासकों को अपने शत्रुओं के विरुद्ध अंग्रेज़ों से सुरक्षा प्राप्त करने के बदले ब्रिटिश सेना के रखरखाव के लिये आर्थिक भुगतान करने को बाध्य किया गया था। अत: कथन 1 सही नहीं है जबकि कथन 2 सही है।
- सहायक संधि करने वाले देशी राजा अथवा शासक किसी अन्य राज्य के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने या अंग्रेज़ों की सहमति के बिना समझौते करने के लिये स्वतंत्र नहीं थे। अत: कथन 3 सही है।
- यह संधि राज्य के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति थी, लेकिन इसका पालन अंग्रेज़ों ने कभी नहीं किया।
- मनमाने ढंग से निर्धारित एवं भारी-भरकम आर्थिक भुगतान ने राज्यों की अर्थव्यवस्था को नष्ट कर दिया एवं राज्यों के लोगों को गरीब बना दिया।
- वहीं ब्रिटिश अब भारतीय राज्यों के व्यय पर एक बड़ी सेना रख सकते थे।
- वे संरक्षित सहयोगी की रक्षा एवं विदेशी संबंधों को नियंत्रित करते थे तथा उनकी भूमि पर शक्तिशाली सैन्य बल की तैनाती करते थे।
  - लॉर्ड वेलेजली ने वर्ष 1798 में हैदराबाद के निज़ाम के साथ 'सहायक संधि' पर हस्ताक्षर किये।
  - इस संधि पर वर्ष 1801 में अवध के नवाब को हस्ताक्षर करने के लिये मज़बूर किया गया।
  - पेशवा बाजीराव द्वितीय ने वर्ष 1802 में बेसिन में सहायक संधि पर हस्ताक्षर किये।

7.

उत्तर: D

व्याख्या:

- चार्टर अधिनियम, 1833 को सेंट हेलेना अधिनियम 1833 या भारत सरकार अधिनियम 1833 के नाम से भी जाना जाता है। अत: विकल्प D सही है।
  - सेंट हेलेना द्वीप का नियंत्रण ईस्ट इंडिया कंपनी से क्राउन को स्थानांतरित कर दिया गया था।
- इसे ब्रिटिश संसद द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी के चार्टर अधिनियम, 1913 के नवीनीकरण के लिये पारित किया गया था।
- इस अधिनियम ने 20 वर्षों के लिये EIC के चार्टर का नवीनीकरण किया।
- ईस्ट इंडिया कंपनी अपने वाणिज्यिक विशेषाधिकारों से वंचित थी।
- चाय और चीन के साथ व्यापार को छोड़कर व्यापार पर कंपनी का एकाधिकार 'लैसेज़-फेयर' और नेपोलियन बोनापार्ट की महाद्वीपीय प्रणाली के परिणामस्वरूप समाप्त हो गया था।

8.

उत्तर: C

व्याख्या:

राष्ट्रीय युवा दिवस 2022:

- स्वामी विवेकानंद की जयंती को हर वर्ष 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस (National Youth Day NYD) के रूप में आयोजित किया जाता है। अत: कथन 1 सही है।

- वर्ष 1999 में संयुक्त राष्ट्र ने इस दिन को प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया।

- वर्ष 1984 में भारत सरकार ने पहली बार स्वामी विवेकानंद के जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। तभी से पूरे देश में इस दिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।
  - यह दिन उन युवाओं को संबोधित करने के लिये मनाया जाता है जो हमारे देश का भविष्य हैं और स्वामी विवेकानंद की जयंती मनाने के लिये जिन्होंने हमेशा देश के युवाओं को प्रेरित किया एवं देश के विकास में युवाओं के सही उपयोग के बारे में बात की।
- स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 को हुआ तथा उनके बचपन का नाम नरेंद्र नाथ दत्त था।
  - उन्होंने दुनिया को वेदांत और योग के भारतीय दर्शन से परिचित करवाया। वे 19वीं सदी के आध्यात्मिक गुरु एवं विचारक रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। अत: कथन 2 सही है।

9.

उत्तर:C

व्याख्या:

तिरुवल्लुवर:

- तिरुवल्लुवर जिन्हें वल्लुवर भी कहा जाता है, एक तमिल कवि-संत थे। अत: कथन 1 सही है।
- धार्मिक पहचान के कारण उनकी कालावधि के संबंध में विरोधाभास है सामान्यत: उन्हें तीसरी-चौथी या आठवीं-नौवीं शताब्दी का माना जाता है।
- सामान्यत: उन्हें जैन धर्म से संबंधित माना जाता है। हालाँकि हिंदुओं का दावा है कि तिरुवल्लुवर हिंदू धर्म से संबंधित थे।
- द्रविड़ समूहों (Dravidian Groups) ने उन्हें एक संत माना क्योंकि वे जाति व्यवस्था में विश्वास नहीं रखते थे।
- उनके द्वारा संगम साहित्य में तिरुक्कुरल या 'कुराल' (Tirukkural or 'Kural') की रचना की गई थी। अत: कथन 2 सही है।
- तिरुक्कुरल में 10 कविताएँ व 133 खंड शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक को तीन पुस्तकों में विभाजित किया गया है:
  - अराम- Aram (सदगुण- Virtue)।
  - पोरुल- Porul (सरकार और समाज)।
  - काम- Kamam (प्रेम)।

10.

उत्तर: C

व्याख्या:

- गुरु रविदास 15वीं और 16वीं शताब्दी के भक्ति आंदोलन के एक रहस्यवादी कवि संत थे और उन्होंने रविदासिया धर्म की स्थापना की। अत: कथन 1 सही है।
  - एक ईश्वर में विश्वास और निष्पक्ष धार्मिक कविताओं की रचना के कारण उन्हें ख्याति प्राप्त हुई।
  - उन्होंने अपना पूरा जीवन जाति व्यवस्था के उन्मूलन के लिये समर्पित कर दिया और ब्राह्मणवादी समाज की धारणा की खुले तौर पर निंदा की।
  - उनके भक्ति गीतों ने भक्ति आंदोलन पर त्वरित प्रभाव डाला। उनकी लगभग 41 कविताओं को सिखों के धार्मिक पाठ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में भी शामिल किया गया।
- डेरा सचखंड बल्लन जो कि दुनिया भर में 20 लाख अनुयायियों के साथ उनका सबसे बड़ा डेरा है, बाबा संत पीपल दास द्वारा 20वीं शताब्दी की शुरुआत में स्थापित किया गया था।
  - पूर्व में सिख धर्म से निकटता से जुड़े होने के बावजूद इस डेरा ने वर्ष 2010 में दशकों पुराने संबंधों को तोड़ दिया और घोषणा की कि वे रविदासिया धर्म का पालन करेंगे।
  - वर्ष 2010 से डेरा सचखंड बल्लन ने रविदासिया मंदिरों और गुरुद्वारों में गुरु ग्रंथ साहिब को अपने स्वयं के ग्रंथ, अमृतबाणी के साथ प्रतिस्थापित कर दिया, जिसमें गुरु रविदास के 200 भजन शामिल थे। अत: कथन 2 सही है।

11.

उत्तर: C

व्याख्या:

लाला लाजपत राय:

- जन्म:
  - उनका जन्म 28 जनवरी, 1865 को पंजाब के फिरोज़पुर ज़िले (Ferozepur District) के धुडीके (Dhudike) नामक एक छोटे से गाँव में हुआ था।
- परिचय:
  - लाला लाजपत राय भारत के महानतम स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे।
  - उन्हें 'पंजाब केसरी' (Punjab Kesari) और 'पंजाब का शेर' (Lion of Punjab) नाम से भी जाना जाता था। अत: कथन 1 सही है।
  - उन्होंने लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज से कानून की पढ़ाई की।

- वे स्वामी दयानंद सरस्वती से प्रभावित होकर लाहौर में आर्य समाज (Arya Samaj) में शामिल हो गए। अत: कथन 2 सही है।
- उनका विश्वास था कि हिंदू धर्म के आदर्शवाद, राष्ट्रवाद (Nationalism) के साथ मिलकर धर्मनिरपेक्ष राज्य (Secular State) की स्थापना करेगा।

12.

उत्तर: C

व्याख्या

- हाल ही में प्रधानमंत्री ने 'चौरी-चौरा' घटना के सौ वर्ष पूरे होने पर स्वतंत्रता संग्राम के वीरों को श्रद्धांजलि दी।
- चौरी-चौरा उत्तर प्रदेश के गोरखपुर ज़िले का एक कस्बा है।
- चौरी-चौरा कस्बे में 4 फरवरी को स्वयंसेवकों ने बैठक की और जुलूस निकालने के लिये पास के मुंडेरा बाज़ार को चुना गया।
  - पुलिस ने भीड़ पर गोलियाँ चलाईं जिसमें कुछ लोग मारे गए और कई स्वयंसेवक घायल हो गए।
  - जवाबी कार्रवाई में भीड़ ने थाने में आग लगा दी।
  - कुछ भागने की कोशिश कर रहे पुलिसकर्मियों को पीट-पीटकर मार डाला गया। हथियारों सहित पुलिस की काफी सारी संपत्ति नष्ट कर दी गई।
  - भारतीय सांविधिक आयोग, जिसे आमतौर पर इसके अध्यक्ष सर जॉन ऑलसेब्रुक साइमन के नाम के कारण साइमन कमीशन के रूप में जाना जाता है, को संभावित संवैधानिक सुधार का अध्ययन करने के लिये वर्ष 1928 (फरवरी-मार्च और अक्तूबर 1928-अप्रैल 1929) में भारत भेजा गया था। अत: कथन 1 सही नहीं है।
- महात्मा गांधी की प्रतिक्रिया:
  - गांधीजी ने पुलिसकर्मियों की हत्या की निंदा की और आस-पास के गाँवों में स्वयंसेवक समूहों को भंग कर दिया गया। इस घटना पर सहानुभूति जताने तथा प्रायश्चित करने के लिये एक 'चौरी-चौरा सहायता कोष' स्थापित किया गया था।
  - गांधीजी ने असहयोग आंदोलन में हिंसा का प्रवेश देख इसे रोकने का फैसला किया।
  - अत: कथन 2 सही नहीं है।

13.

उत्तर: C

व्याख्या:

व्यपगत का सिद्धांत (Doctrine of Lapse):

- व्यपगत का सिद्धांत पहली बार लॉर्ड डलहौजी ने 1840 के दशक के अंत में लागू किया था। अत: कथन 1 सही है।
- इसका उद्देश्य भारत में ब्रिटिश राज्यक्षेत्र का विस्तार करना था। इस सिद्धांत के अनुसार वे राज्य, जिनका कोई उत्तराधिकारी नहीं था उनकी संपूर्ण संपत्ति को ब्रिटिश शासन के अधीन मिला लिया जाता था।
- व्यपगत सिद्धांत के तहत सतारा, नागपुर और झांसी को मिला लिया गया। अत: कथन 2 सही है।

14.

उत्तर: D

व्याख्या:

- लस्सा बुखार पैदा करने वाला वायरस पश्चिम अफ्रीका में पाया जाता है और पहली बार इसे वर्ष 1969 में नाइजीरिया के लासा में खोजा गया था। अत: कथन 1 सही है।
  - यह बुखार चूहों द्वारा फैलता है तथा मुख्य रूप से सिएरा लियोन, लाइबेरिया, गिनी और नाइजीरिया सहित पश्चिम अफ्रीका के देशों में पाया जाता है जहाँ यह (लस्सा बुखार) स्थानिक है।
  - मेटोमिस (Matomys) चूहों में घातक लस्सा वायरस फैलाने की क्षमता होती है।
- इस बीमारी से जुड़ी मृत्यु दर कम (लगभग 1%) है। लेकिन कुछ व्यक्तियों में मृत्यु दर अधिक होती है, जैसे कि गर्भवती महिलाओं में अंतिम तीन महीनों के दौरान। अत: कथन 2 सही है।
  - यूरोपियन सेंटर फॉर डिजीज़ प्रिवेंशन एंड कंट्रोल के अनुसार, लगभग 80% मामले स्पर्शोन्मुख हैं और इसलिये इनका निदान नहीं किया जाता है।
- लक्षण:
  - इसके सामान्य लक्षणों में हल्का बुखार, थकान, कमज़ोरी और सिरदर्द शामिल हैं।
  - गंभीर लक्षणों में रक्तस्राव, साँस लेने में कठिनाई, उल्टी, चेहरे की सूजन और छाती, पीठ एवं पेट में दर्द आदि शामिल हैं।
  - लक्षणों की शुरुआत के दो सप्ताह में रोगी की मृत्यु हो सकती है, आमतौर पर बहु-अंग विफलता के परिणामस्वरूप।
- उपचार:
  - एंटीवायरल दवा 'रिबाविरिन' (Ribavirin) लस्सा बुखार के लिये एक प्रभावी उपचार प्रतीत होता है, लेकिन बीमारी होने पर इसे तुरंत दिया जाना चाहिये। अत: कथन 3 सही है।

15.

उत्तर: B

व्याख्या:

- वर्ष 1510 में गोवा एक पुर्तगाली उपनिवेश बन गया, जब एडमिरल 'अल्फांसो द अल्बुकर्क' ने जियापुर के सुल्तान युसूफ आदिल शाह की सेना को हराया। अत: कथन 1 सही नहीं है।

- वर्ष 1961 में पुर्तगालियों के साथ राजनयिक प्रयासों की विफलता के बाद भारत सरकार द्वारा ऑपरेशन विजय चलाकर 19 दिसंबर को दमन और दीव तथा गोवा को भारतीय मुख्य भूमि के साथ मिला लिया गया। अत: कथन 2 सही है।
- इसने गोवा में 451 वर्षों के पुर्तगाली विदेशी प्रांतीय शासन का अंत कर दिया।

16.

उत्तर: D

व्याख्या:

बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के बारे में:

- वर्ष 1920 में उन्होंने एक पाक्षिक (15 दिन की अवधि में छपने वाला) समाचार पत्र 'मूकनायक' (Mooknayak) की शुरुआत की जिसने एक मुखर और संगठित दलित राजनीति की नींव रखी। अत: कथन 1 सही है।
- उन्होंने बहिष्कृत हितकारिणी सभा (1923) की स्थापना की, जो दलितों के बीच शिक्षा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित थी।
- हिंदुओं के प्रतिगामी रिवाज़ों को चुनौती देने के लिये मार्च 1927 में उन्होंने महाड़ सत्याग्रह (Mahad Satyagraha) का नेतृत्त्व किया।
- वर्ष 1930 के कालाराम मंदिर आंदोलन में अंबेडकर ने कालाराम मंदिर के बाहर विरोध प्रदर्शन किया, क्योंकि दलितों को इस मंदिर परिसर में प्रवेश नहीं करने दिया जाता था। इसने भारत में दलित आंदोलन शुरू करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। अत: कथन 2 सही है।
- उन्होंने तीनों गोलमेज सम्मेलनों (Round-Table Conferences) में भाग लिया।
- वर्ष 1932 में उन्होंने महात्मा गांधी के साथ पूना समझौते (Poona Pact) पर हस्ताक्षर किये, जिसके परिणामस्वरूप वंचित वर्गों के लिये अलग निर्वाचक मंडल (सांप्रदायिक पंचाट) के विचार को त्याग दिया गया।
- उन्होंने स्वतंत्र भारत के पहले मंत्रिमंडल में कानून मंत्री बनने के प्रधानमंत्री नेहरू के आमंत्रण को स्वीकार किया। अत: कथन 3 सही है।

17.

उत्तर: D

व्याख्या:

विद्रोह की विफलता के कारण:

- सीमित प्रभाव: विद्रोह मुख्य रूप से दोआब क्षेत्र तक ही सीमित था।
  - बड़ी रियासतें हैदराबाद, मैसूर, त्रावणकोर और कश्मीर तथा राजपूताना इस विद्रोह में शामिल नहीं हुए। अत: कथन 1 सही है।
  - दक्षिणी प्रांतों ने भी इसमें भाग नहीं लिया।
- प्रभावी नेतृत्व का अभाव: विद्रोहियों के बीच एक प्रभावी नेता का अभाव था। हालाँकि नाना साहेब, तात्या टोपे और रानी लक्ष्मीबाई आदि बहादुर नेता थे, लेकिन वे समग्र रूप से आंदोलन को प्रभावी नेतृत्व प्रदान नहीं कर सके। अत: कथन 2 सही है।
- सीमित संसाधन: सत्ताधारी होने के कारण रेल, डाक, तार एवं परिवहन तथा संचार के अन्य सभी साधन अंग्रेज़ों के अधीन थे। इसलिये विद्रोहियों के पास हथियारों और धन की कमी थी।
- मध्य वर्ग की भागीदारी नहीं: अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त मध्यम वर्ग, बंगाल के अमीर व्यापारियों और ज़मींदारों ने विद्रोह को दबाने में अंग्रेज़ों की मदद की। अत: कथन 3 सही है।

18.

उत्तर: D

व्याख्या:

विद्रोह का परिणाम:

- कंपनी शासन का अंत: विद्रोह ने भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के अंत को चिह्नित किया। अत: विकल्प A सही है।
  - इलाहाबाद के एक दरबार में 'लॉर्ड कैनिंग' ने घोषणा की कि भारतीय प्रशासन अब महारानी विक्टोरिया यानी 'ब्रिटिश संसद' के अधीन था।
- धार्मिक सहिष्णुता: अंग्रेज़ों ने यह वादा किया कि वे भारत के लोगों के धर्म एवं सामाजिक रीति-रिवाज़ों और परंपराओं का सम्मान करेंगे।
- प्रशासनिक परिवर्तन: भारत के गवर्नर जनरल के पद को वायसराय के पद से स्थानांतरित किया गया। अत: विकल्प B सही है।
  - भारतीय शासकों के अधिकारों को मान्यता दी गई थी।
  - व्यपगत के सिद्धांत को समाप्त कर दिया गया था। अत: विकल्प C सही है।
  - अपनी रियासतों को दत्तक पुत्रों को सौंपने की छूट दे दी गई थी।
- सैन्य पुनर्गठन: सेना में भारतीय सिपाहियों का अनुपात कम करने और यूरोपीय सिपाहियों की संख्या बढ़ाने का निर्णय लिया गया लेकिन शस्त्रागार ब्रिटिश शासन के हाथों में रहा। बंगाल की सेना के प्रभुत्व को समाप्त करने के लिये यह योजना बनाई गई थी। अत: विकल्प D सही नहीं है।

19.

उत्तर: D

व्याख्या

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

- राजाजी के नाम से मशहूर चक्रवर्ती राजगोपालाचारी का जन्म 10 दिसंबर, 1878 को हुआ था।

- उन्होंने मद्रास (अब चेन्नई) में प्रेसीडेंसी कॉलेज से कानून की पढ़ाई की और वर्ष 1900 में 'सेलम' में अपनी प्रैक्टिस शुरू की।
- वर्ष 1955 में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित किया गया।
- 25 दिसंबर, 1972 को उनका निधन हो गया।

- स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका:
  - असहयोग आंदोलन: वह महात्मा गांधी से पहली बार वर्ष 1919 में मद्रास (अब चेन्नई) में मिले और गांधी के असहयोग आंदोलन में भाग लिया।
    - वर्ष 1920 में उन्हें वेल्लोर में दो साल की जेल भी हुई थी।
    - जेल से रिहा होने के बाद, उन्होंने गांधी के हिंदू-मुस्लिम सद्भाव और अस्पृश्यता के उन्मूलन के सिद्धांतों को बढ़ावा देने के लिये अपना आश्रम खोला।
    - वे खादी के भी समर्थक थे।
  - वायकोम सत्याग्रह: वे अस्पृश्यता के खिलाफ वायकोम सत्याग्रह आंदोलन (Vaikom Satyagraha Movement) में भी शामिल थे।
  - दांडी मार्च: वर्ष 1930 में जब गांधी जी ने नमक कानून तोड़ने के लिये दांडी मार्च का नेतृत्व किया, तो राजगोपालाचारी ने मद्रास प्रेसीडेंसी दांडी मार्च के समर्थन में 'वेदारण्यम' में एक मार्च निकाला। अत: कथन 3 सही है।
    - वह गांधी के अखबार यंग इंडिया के संपादक भी बने।
  - भारत छोड़ो आंदोलन: भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, राजगोपालाचारी ने गांधी का विरोध किया।
    - उनका विचार था कि अंग्रेज़ अंतत: देश छोड़ने ही वाले थे तो एक और सत्याग्रह शुरू करना एक अच्छा निर्णय नहीं था। अत: कथन 2 सही है।
- वर्ष 1947 में लॉर्ड माउंटबेटन की अनुपस्थिति के दौरान अंतिम ब्रिटिश वायसराय और स्वतंत्र भारत के पहले गवर्नर जनरल राजगोपालाचारी को अस्थायी रूप से पद संभालने के लिये चुना गया था। अत: कथन 1 सही है।

20.

उत्तर: A

व्याख्या:

- अरबिंदो घोष का जन्म 15 अगस्त, 1872 को कलकत्ता में हुआ था। वह एक योगी, द्रष्टा, दार्शनिक, कवि और भारतीय राष्ट्रवादी थे जिन्होंने आध्यात्मिक विकास के माध्यम से पृथ्वी पर दिव्य जीवन के दर्शन को प्रतिपादित किया।
- 5 दिसंबर, 1950 को पांडिचेरी में उनका निधन हो गया।
- वर्ष 1902 से 1910 तक उन्होंने भारत को अंग्रेज़ों से मुक्त कराने हेतु संघर्ष में भाग लिया। उनकी राजनीतिक गतिविधियों के परिणामस्वरूप उन्हें वर्ष 1908 (अलीपुर बम कांड) में कैद कर लिया गया था। अत: विकल्प A सही है।
- दो साल बाद वह ब्रिटिश भारत से भाग गए और पांडिचेरी (पुदुचेरी) के फ्राँसीसी उपनिवेश में शरण ली, जहाँ उन्होंने अपने पूरे जीवन को एक पूर्ण और आध्यात्मिक रूप से परिवर्तित जीवन के उद्देश्य से अपने "अभिन्न" योग के विकास के हेतु समर्पित कर दिया।

21.

उत्तर: D

व्याख्या:

- पंडित मदन मोहन मालवीय महान शिक्षाविद्, बेहतरीन वक्ता और एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता थे।
  - गोपाल कृष्ण गोखले और बाल गंगाधर तिलक दोनों का ही अनुयायी होने के कारण उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में क्रमश: उदारवादी और राष्ट्रवादी तथा नरमपंथी एवं गरमपंथी दोनों के बीच की विचारधारा का नेता माना जाता था।
- योगदान:
  - मालवीय जी को 'गिरमिटिया मज़दूरी' प्रथा को समाप्त करने में उनकी भूमिका के लिये याद किया जाता है।
    - 'गिरमिटिया मज़दूरी' प्रथा बंधुआ मज़दूरी प्रथा का ही एक रूप है, जिसे वर्ष 1833 में दास प्रथा के उन्मूलन के बाद स्थापित किया गया था।
    - 'गिरमिटिया मज़दूरों' को वेस्टइंडीज़, अफ्रीका और दक्षिण-पूर्व एशिया में ब्रिटिश कालोनियों में चीनी, कपास तथा चाय बागानों एवं रेल निर्माण परियोजनाओं में कार्य करने के लिये भर्ती किया जाता था।
  - हरिद्वार के भीमगोड़ा में गंगा के प्रवाह को प्रभावित करने वाली ब्रिटिश सरकार की नीतियों से आशंकित मालवीय जी ने वर्ष 1905 में गंगा महासभा की स्थापना की थी।
  - वे एक सफल समाज सुधारक और नीति निर्माता थे, जिन्होंने 11 वर्ष (1909-1920) तक 'इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल' के सदस्य के रूप में कार्य किया।
  - उन्होंने 'सत्यमेव जयते' शब्द को लोकप्रिय बनाया। हालाँकि यह वाक्यांश मूल रूप से 'मुण्डकोपनिषद' से है। अब यह शब्द भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य है।
  - मालवीय जी के प्रयासों के कारण ही देवनागरी (हिंदी की लिपि) को ब्रिटिश-भारतीय अदालतों में पेश किया गया था।
  - उन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकता को बनाए रखने की दिशा में भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उन्हें सांप्रदायिक सद्भाव से संबंधित विषयों पर भाषण देने के लिये जाना जाता था।

- जातिगत भेदभाव और ब्राह्मणवादी पितृसत्ता पर अपने विचार व्यक्त करने के लिये उन्हें ब्राह्मण समुदाय से बाहर कर दिया गया था।
- उन्होंने वर्ष 1915 में हिंदू महासभा की स्थापना में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।
- मालवीय जी ने वर्ष 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) की स्थापना की थी। अत: विकल्प D सही है।

22.

उत्तर: A

व्याख्या:

- चौधरी चरण सिंह:
  - भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की जयंती (23 दिसंबर) देश भर में 'किसान दिवस' या राष्ट्रीय किसान दिवस के रूप में मनाई जाती है।
  - पूरे देश में किसानों के उत्थान और कृषि के विकास की दिशा में उनके काम के लिये उन्हें 'चैंपियन ऑफ इंडियाज़ पीजेंट्स' उपनाम दिया गया था।
  - उन्होंने साहूकारों से किसानों को राहत देने के लिये ऋण मोचन विधेयक 1939 के निर्माण और उसे अंतिम रूप देने में अग्रणी भूमिका निभाई।
    - उन्होंने भूमि जोत अधिनियम, 1960 को लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसका उद्देश्य पूरे राज्य में भूमि जोत की सीमा को कम करना था ताकि इसे एक समान बनाया जा सके।
  - वह 'ज़मींदारी का उन्मूलन', 'को-ऑपरेटिव फार्मिंग एक्सरेड', 'भारत की गरीबी और उसका समाधान', 'किसान स्वामित्व या श्रमिकों के लिये भूमि' तथा 'श्रमिकों के विभाजन की रोकथाम' सहित 'प्रीवेंशन ऑफ डिवीज़न ऑफ होल्डिंग्स ब्लो अ सर्टेन मिनिमम' जैसी कई पुस्तकों और पुस्तिकाओं के लेखक थे। अत: विकल्प A सही है।

23.

उत्तर: A

व्याख्या:

इंडियन नेशनल आर्मी:

- INA का गठन पहली बार मोहन सिंह (Mohan Singh) और जापानी मेजर इविची फुजिवारा (Iwaichi Fujiwara) के नेतृत्त्व में किया गया था तथा इसमें मलायन (वर्तमान मलेशिया) अभियान में सिंगापुर में जापान द्वारा कब्जा किये गए ब्रिटिश-भारतीय सेना के युद्ध के भारतीय कैदियों को शामिल किया गया था। अत: कथन 1 सही है।
- INA में सिंगापुर के जेल में बंद भारतीय कैदी और दक्षिण-पूर्व एशिया के भारतीय नागरिक दोनों शामिल थे। इसकी सैन्य संख्या बढ़कर 50,000 हो गई। अत: कथन 2 सही नहीं है।
- INA ने वर्ष 1944 में इम्फाल और बर्मा में भारत की सीमा के भीतर संबद्ध सेनाओं का मुकाबला किया।
- हालाँकि रंगून के पतन के साथ ही आज़ाद हिंद सरकार एक प्रभावी राजनीतिक इकाई बन गई।
- नवंबर 1945 में ब्रिटिश सरकार द्वारा INA के लोगों पर मुकदमा चलाए जाने के तुरंत बाद पूरे देश में बड़े पैमाने पर प्रदर्शन हुए।

24.

उत्तर: B

व्याख्या:

- पं. मदन मोहन मालवीय एक महान शिक्षाविद्, अग्रणी, वाक्पटु बयानबाजी और राष्ट्रीय नेता थे।
  - स्वतंत्रता संग्राम में, वह उदारवादियों और राष्ट्रवादियों, नरमपंथियों और चरमपंथियों के बीच में थे, क्योंकि उन्हें क्रमश: गोखले और तिलक के अनुयायी कहा जाता था।
  - उन्हें महात्मा गांधी द्वारा 'महामना' की उपाधि दी गई और भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. एस राधाकृष्णन ने उन्हें 'कर्मयोगी' का दर्जा दिया। अत: कथन 1 सही नहीं है।
- एक पत्रकार के रूप में उन्होंने वर्ष 1907 में एक हिंदी साप्ताहिक 'अभ्युदय' शुरू किया और वर्ष 1915 में इसे दैनिक और वर्ष 1910 में हिंदी मासिक, मर्यादा भी जारी किया। अत: कथन 3 सही है।
  - उन्होंने वर्ष 1909 में एक अंग्रेजी दैनिक- लीडर शुरू किया।
  - मालवीय हिन्दी साप्ताहिक हिन्दुस्तान एंड इंडियन यूनियन के संपादक थे।
  - वह कई वर्षों तक हिंदुस्तान टाइम्स के निदेशक मंडल के अध्यक्ष भी रहे।
- पुरस्कार और सम्मान:
  - 2014 में, उन्हें मरणोपरांत देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। अत: कथन 2 सही है।
  - 2016 में, भारतीय रेलवे ने नेता के सम्मान में वाराणसी-नई दिल्ली महामना एक्सप्रेस शुरू की।

25.

उत्तर: B

व्याख्या:

- सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को उड़ीसा के कटक शहर में हुआ था। उनकी माता का नाम प्रभावती दत्त बोस और पिता का नाम जानकीनाथ बोस था।

- जुलाई 1943 में वे जर्मनी से जापान-नियंत्रित सिंगापुर पहुँचे, जहाँ उन्होंने अपना प्रसिद्ध नारा 'दिल्ली चलो' जारी किया और 21 अक्तूबर, 1943 को 'आज़ाद हिंद सरकार' तथा 'भारतीय राष्ट्रीय सेना' के गठन की घोषणा की।
- प्रसिद्ध नारा "तुम मुझे खून दो, और मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा!" साथ ही "जय हिंद" का श्रेय बोस को बहुत दिया जाता है।

- उन्होंने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का नाम शाहिद स्वराज द्वीप समूह रखा। अत: कथन 1 सही है।
- वे सिंगापुर से अपने संबोधन में महात्मा गांधी को "राष्ट्रपिता" कहने वाले पहले व्यक्ति थे। अत: कथन 2 सही है।
- वे भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के सक्रिय सदस्य थे। अत: कथन 3 सही नहीं है।

26.

उत्तर: D

व्याख्या:

- पांडिचेरी में उन्होंने आध्यात्मिक साधकों के एक समुदाय की स्थापना की, जिसने वर्ष 1926 में श्री अरबिंदो आश्रम के रूप में आकार लिया।
- उनका मानना था कि पदार्थ, जीवन और मन के मूल सिद्धांतों को स्थलीय विकास के माध्यम से सुपरमाइंड के सिद्धांत द्वारा अनंत और परिमित दो क्षेत्रों के बीच एक मध्यवर्ती शक्ति के रूप में सफल किया जाएगा।
- साहित्यिक कार्य:
  - बंदे मातरम नामक एक अंग्रेज़ी अखबार (वर्ष 1905 में)।
  - योग के आधार।
  - भगवदगीता और उसका संदेश।
  - मनुष्य का भविष्य विकास।
  - पुनर्जन्म और कर्म।
  - सावित्री: एक किंवदंती और एक प्रतीक।
  - आवर ऑफ गॉड। अत: विकल्प D सही है।

27.

उत्तर: D

व्याख्या

- सरदार वल्लभभाई पटेल, स्वतंत्र भारत के पहले गृहमंत्री और उप प्रधानमंत्री थे।
- भारतीय रियासतों के भारतीय संघ में एकीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने और रियासतों को भारतीय संघ के साथ जुड़ने के लिये राजी करने हेतु इन्हें "भारत के लौह पुरुष" के रूप में जाना जाता है।
- उन्होंने भारतीय संविधान सभा की विभिन्न समितियों का नेतृत्त्व किया-
  - मौलिक अधिकारों पर सलाहकार समिति।
  - अल्पसंख्यकों और जनजातीय व बहिष्कृत क्षेत्रों पर समिति।
  - प्रांतीय संविधान समिति।
  - 'संघ शक्ति समिति' की अध्यक्षता प्रधानमंत्री नेहरु द्वारा की गई थी।
  - अत: विकल्प D सही है।

28.

उत्तर: A

व्याख्या:

शिवाजी के अधीन प्रशासन

- केंद्रीय प्रशासन: इसकी स्थापना शिवाजी द्वारा प्रशासन की सुदृढ़ व्यवस्था के लिये की गई थी जो प्रशासन की दक्कन शैली से काफी प्रेरित थी। अत: कथन 1 सही है।
  - अधिकांश प्रशासनिक सुधार अहमदनगर में मलिक अंबर (Malik Amber) के सुधारों से प्रेरित थे।
  - राजा राज्य का सर्वोच्च प्रमुख होता था जिसे 'अष्टप्रधान' के नाम से जाना जाने वाले आठ मंत्रियों के एक समूह द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी।
  - पेशवा, जिसे मुख्य प्रधान के रूप में भी जाना जाता है, मूल रूप से राजा शिवाजी की सलाहकार परिषद का नेतृत्व करता था।
- राजस्व प्रशासन: शिवाजी ने जागीरदारी प्रणाली को समाप्त कर दिया और इसे रैयतवारी प्रणाली से बदल दिया तथा वंशानुगत राजस्व अधिकारियों की स्थिति में परिवर्तन किया, जिन्हें देशमुख, देशपांडे, पाटिल एवं कुलकर्णी के नाम से जाना जाता था। अत: कथन 2 सही नहीं है।
  - चौथ और सरदेशमुखी आय के अन्य स्रोत थे।
    - चौथ कुल राजस्व का 1/4 भाग था जिसे गैर-मराठा क्षेत्रों से मराठा आक्रमण से बचने के बदले में वसूला जाता था।
    - यह आय का 10 प्रतिशत होता था जो अतिरिक्त कर के रूप में होता था। अत: कथन 3 सही है।

29.

उत्तर: B

व्याख्या:

विद्रोह के केंद्र, नेतृत्व और दमन

विद्रोह के स्थान	भारतीय नेता	ब्रिटिश अधिकारी जिन्होंने विद्रोह को दबा दिया
दिल्ली	बहादुर शाह द्वितीय	जॉन निकोलसन
लखनऊ	बेगम हजरत महल	हेनरी लारेंस
कानपुर	नाना साहेब	सर कोलिन कैंपबेल
झाँसी और ग्वालियर	लक्ष्मी बाई और तात्या टोपे	जनरल ह्यूग रोज
बरेली	खान बहादुर खान	सर कोलिन कैंपबेल
इलाहाबाद और बनारस	मौलवी लियाकत अली	कर्नल ऑनसेल
बिहार	कुँवर सिंह	विलियम टेलर

- अत: विकल्प B सही है।

30.

उत्तर: B

व्याख्या:

- प्रत्येक वर्ष 11 नवंबर को स्वतंत्र भारत के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (National Education Day) के रूप में मनाया जाता है।
- मौलाना अबुल कलाम आज़ाद जिनका मूल नाम मुहियुद्दीन अहमद था, का जन्म 11 नवंबर, 1888 को मक्का, सऊदी अरब में हुआ था।
- ये विभाजन के कट्टर विरोधी थे तथा हिंदू मुस्लिम एकता के समर्थक थे।
  - वर्ष 1912 में उन्होंने उर्दू में अल-हिलाल नामक एक साप्ताहिक पत्रिका शुरू की, जिसने मॉर्ले-मिंटो सुधारों (1909) के बाद दो समुदायों के बीच हुए मनमुटाव को समाप्त कर हिंदू-मुस्लिम एकता को स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई अत: कथन 1 सही है।
  - सरकार ने अल-हिलाल पत्रिका को अलगाववादी विचारों का प्रचारक माना और 1914 में इस पर प्रतिबंध लगा दिया।
- आज़ाद ने गांधीजी द्वारा शुरू किये गए असहयोग आंदोलन (1920-22) का समर्थन किया और 1920 में भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस में शामिल हुए।
  - वर्ष 1923 में उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष के रूप में चुना गया। वे 1940 में फिर से कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष बने और 1946 तक इस पद पर बने रहे। अत: कथन 2 सही नहीं है।
- मौलाना अबुल कलाम आज़ाद को मरणोपरांत वर्ष 1992 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। अत: कथन 3 सही है।

31.

उत्तर: A

व्याख्या:

- कर्नाटक सरकार ने इस वर्ष (2021) से पूरे राज्य में 11 नवंबर को 'ओनाके ओबव्वा जयंती' के रूप में मनाने का फैसला किया है।
  - ओनाके ओबाव्वा एक महिला योद्धा थीं, जिन्होंने 18वीं शताब्दी में चित्रदुर्ग में एक मूसल (कन्नड़ में 'ओनाके') के साथ अकेले ही 'हैदर अली' की सेना से लड़ाई लड़ी थी।
- ओबाव्वा को कन्नड़ गौरव का प्रतीक माना जाता है तथा कर्नाटक राज्य की अन्य महिला योद्धाओं में शामिल किया जाता है जैसे-
  - अब्बक्का रानी (तटीय कर्नाटक में उल्लाल की पहली तुलुवा रानी जो पुर्तगालियों से लड़ी)।
  - केलाड़ी चेनम्मा (केलाडी साम्राज्य की रानी जो मुगल सम्राट औरंगज़ेब के खिलाफ लड़ने के लिये जानी जाती है)।
  - कित्तूर चेन्नम्मा (कित्तूर की रानी जिसे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ 1824 के विद्रोह के लिये जाना जाता है)।

अत: विकल्प A सही है।

32.

उत्तर: A

व्याख्या:

- ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना मई 1939 में सुभाष चंद्र बोस ने की थी। यह भारत में एक वामपंथी राष्ट्रवादी राजनीतिक दल था जो वर्ष 1939 में भारतीय कॉन्ग्रेस के भीतर एक गुट के रूप में उभरा। अत: कथन 1 सही नहीं है।
  - फॉरवर्ड ब्लॉक का पहला अखिल भारतीय सम्मेलन जून 1940 में नागपुर में आयोजित किया गया था और इसने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष के लिये उग्रवादी कार्रवाई का आग्रह करते हुए 'भारतीय लोगों को सभी शक्ति' (All Power to the Indian People) शीर्षक से एक प्रस्ताव पारित किया। अत: कथन 2 सही है।
- फॉरवर्ड ब्लॉक का मुख्य उद्देश्य कॉन्ग्रेस पार्टी के सभी कट्टरपंथी तत्त्वों को एक साथ लाना था। ताकि यह समानता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों के पालन के साथ भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के अर्थ का प्रसार कर सके।

- 23 जून,1942 को इसे प्रतिबंधित घोषित कर दिया गया। यहाँ तक कि जब इसे अवैध घोषित किया गया, तब भी इसने लोगों के संघर्ष को सफलता और गौरव का ताज पहनाने में क्रांतिकारी भूमिका निभाई।
  - भारत की स्वतंत्रता के बाद पार्टी ने खुद को एक स्वतंत्र राजनीतिक दल के रूप में पुर्नस्थापित किया।

33.

उत्तर: D

व्याख्या:

- पसुंपोन मुथुरामलिंगा थेवार एक स्वतंत्रता सेनानी-सह-आध्यात्मिक नेता थे। उन्हें मुकुलथोर समुदाय के बीच एक देवता के रूप में देखा जाता है, यह कल्लर, मरावर और अहंबादियार नामक समुदायों के समूह में से एक समुदाय है।
  - उन्होंने पारंपरिक हिंदू धर्म को स्वीकार नहीं किया क्योंकि यह 'वर्णाश्रम' का समर्थन करता था। उन्होंने हमेशा हिंदू धर्म की बुराइयों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
  - उन्होंने खुले तौर पर धार्मिक अंधविश्वासों और संकीर्ण सोच की निंदा की।
- समाजवादी और सुभाष चंद्र बोस के सहयोगी होने के नाते, उन्होंने वर्ष 1952 से अखिल भारतीय फॉरवर्ड ब्लॉक (AIFB) के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। अत: कथन 1 सही है।
  - वह AIFB के राष्ट्रीय संसदीय क्षेत्र के लिये तीन बार चुने गए।
- मंदिर प्रवेश प्राधिकरण और क्षतिपूर्ति अधिनियम, 1939 में सी. राजगोपालाचारी की सरकार द्वारा पारित किया गया था।
  - इसने दलितों के हिंदू मंदिरों में प्रवेश पर प्रतिबंध को हटा दिया।
  - उन्होंने इस सुधार का समर्थन किया और जुलाई 1939 में दलितों को मदुरै के मीनाक्षी मंदिर में प्रवेश कराने वाले कार्यकर्ता ए. वैद्यनाथ अय्यर की मदद की। अत: कथन 2 सही है।
- 1920 में अंग्रेज़ों द्वारा मुकुलथोर समुदाय के खिलाफ अधिनियमित आपराधिक जनजाति अधिनियम (CTA), जिसके खिलाफ थेवार ने लोगों को लामबंद करके विरोध और प्रदर्शन शुरू किया, उनके व्यक्तित्व को उत्तम बनाने में एक प्रमुख मील का पत्थर साबित हुआ।
  - CTA ने इस समुदाय को आदतन अपराधियों के रूप में नामित करके इनका अपराधीकरण किया।
  - निरंतर प्रयासों के बाद वर्ष 1946 में अधिनियम को निरस्त कराने में पसुंपोन मुथुरामलिंगा थेवार महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। अत: कथन 3 सही है।

34.

उत्तर: C

व्याख्या

- वर्ष 1930 में गांधीजी ने घोषणा की कि वे नमक कानून को तोड़ने के लिये एक मार्च का नेतृत्व करेंगे।
  - उन्होंने साबरमती आश्रम से गुजरात के तटीय शहर दांडी तक मार्च किया, जहाँ उन्होंने समुद्र के किनारे पाए जाने वाले प्राकृतिक नमक को इकट्ठा करके और नमक पैदा करने के लिये समुद्र के पानी को उबालकर सरकारी कानून तोड़ा।
  - यह घटना सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत को चिह्नित करती है।
- वर्ष 1931 में गांधीजी ने एक संघर्ष विराम (गांधी-इरविन संधि) को स्वीकार कर लिया और सविनय अवज्ञा को समाप्त कर दिया तथा भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में लंदन में दूसरे 'गोलमेज सम्मेलन' में हिस्सा लेने के लिये सहमत हो गए।
  - लंदन से लौटने के बाद महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को फिर से शुरू कर दिया। एक वर्ष से अधिक समय तक यह आंदोलन जारी रहा, किंतु वर्ष 1934 तक इसने अपनी शक्ति खो दी।
- दिसंबर 1920 में नागपुर में कॉन्ग्रेस के अधिवेशन में असहयोग आंदोलन को अंगीकार किया गया।
  - फरवरी 1922 में चौरी-चौरा कांड के बाद महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को वापस लेने का फैसला किया। अत: विकल्प C सही है।

35.

उत्तर: D

व्याख्या:

- श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्तूबर, 1857 को गुजरात के कच्छ ज़िले के मांडवी शहर में हुआ था।
- उन्होंने लंदन में इंडियन होम रूल सोसाइटी, इंडिया हाउस और द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट की स्थापना की।
  - इंडियन होम रूल सोसाइटी और इंडिया हाउस ने ब्रिटेन में युवाओं को भारत में अपने ही प्रतिनिधियों के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियों हेतु प्रेरित करने की दिशा में काम किया।
  - भारतीय होम रूल सोसाइटी के माध्यम से उन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन की आलोचना की।
- वर्मा बॉम्बे आर्य समाज के पहले अध्यक्ष बने। उन्होंने वीर सावरकर को प्रेरित किया जो लंदन में इंडिया हाउस के सदस्य थे। वर्मा ने भारत में कई राज्यों के दीवान के रूप में भी कार्य किया। अत: विकल्प D सही है।

36.

उत्तर: C

व्याख्या:

- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्तूबर, 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में हुआ था।
  - इनकी जयंती को 'राष्ट्रीय नवाचार दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
- उन्होंने वर्ष 1954 में सेंट जोसेफ कॉलेज (त्रिची) से विज्ञान विषय में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और वर्ष 1957 में 'मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी' (MIT) से वैमानिकी इंजीनियरिंग में विशेषज्ञता हासिल की।
- उन्हें वर्ष 2002 में भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में चुना गया और वर्ष 2007 में उन्होंने अपना कार्यकाल पूरा किया।
- उन्होंने कई सफल मिसाइलों के निर्माण हेतु कार्यक्रमों की योजना बनाई, जिसके कारण उन्हें "मिसाइल मैन" के नाम से भी जाना जाता है। अत: कथन 2 सही है।
- वर्ष 1998 में उन्होंने 'टेक्नोलॉजी विज़न-2020' नामक एक देशव्यापी योजना को सामने रखा, जिसे उन्होंने 20 वर्षों में भारत को 'अल्प-विकसित' से विकसित समाज में बदलने के लिये एक रोडमैप के रूप में पेश किया। अत: कथन 1 सही है।
  - योजना में अन्य उपायों के अलावा कृषि उत्पादकता में वृद्धि, आर्थिक विकास के वाहक के रूप में प्रौद्योगिकी पर ज़ोर देना और स्वास्थ्य देखभाल एवं शिक्षा तक पहुँच को व्यापक बनाना भी शामिल है।
- उन्होंने भारत के पहले स्वदेशी 'सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल' (SLV-3) को विकसित करने हेतु परियोजना निदेशक के रूप में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, जिसने जुलाई 1980 में 'रोहिणी उपग्रह' का नियर-अर्थ ऑर्बिट में सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया और भारत को स्पेस क्लब का एक विशेष सदस्य बनाया।
- कलाम और सोमा राजू की जोड़ी ने वर्ष 2012 में देश के ग्रामीण इलाकों में बेहतर स्वास्थ्य देखभाल प्रशासन के लिये एक मज़बूत टैबलेट कंप्यूटर तैयार किया। उन्होंने इसे 'कलाम-राजू टैबलेट' नाम दिया।

37.

उत्तर: C

व्याख्या:

- महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्तूबर, 1869 को पोरबंदर (गुजरात) में हुआ था। वे एक प्रसिद्ध वकील, राजनेता, सामाजिक कार्यकर्त्ता और लेखक थे, जिन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- उनका सामाजिक कार्य:
  - उन्होंने तथाकथित अछूतों के उत्थान के लिये भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया और अछूतों को एक नया नाम दिया- 'हरिजन', जिसका अर्थ है 'ईश्वर की संतान'।
    - सितंबर 1932 में 'बी.आर. अंबेडकर' ने महात्मा गांधी के साथ 'पूना समझौते' पर बातचीत की। अत: कथन 1 सही नहीं है।
  - आत्मनिर्भरता का उनका प्रतीक- चरखा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक लोकप्रिय चिह्न बन गया।
  - उन्होंने लोगों को शांत करने और हिंदू-मुस्लिम दंगों को रोकने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, क्योंकि देश के विभाजन से पहले तथा उसके दौरान दोनों समुदायों के बीच तनाव काफी बढ़ गया था।
    - वर्ष 1942 में उन्होंने महाराष्ट्र के वर्धा में 'हिंदुस्तानी प्रचार सभा' की स्थापना की। इस संगठन का उद्देश्य हिंदी और उर्दू के बीच एक संपर्क भाषा हिंदुस्तानी को बढ़ावा देना था। अत: कथन 2 सही है।
- पुस्तकें: हिंद स्वराज, सत्य के साथ मेरे प्रयोग (आत्मकथा)। अत: कथन 3 सही है।

38.

उत्तर: D

व्याख्या:

हाल ही में महान स्वतंत्रता सेनानी वी.ओ. चिदंबरम पिल्लई को उनकी 150वीं जयंती पर श्रद्धांजलि दी गई।

- वह एक लोकप्रिय कप्पलोटिया थमिज़ान (तमिल खेवनहार) और "चेक्किलुथथा चेम्मल"के रूप में जाने जाते थे। अत: कथन 1 सही है।
- चिदंबरम पिल्लई ने 1905 में बंगाल के विभाजन के बाद राजनीति में प्रवेश किया।
- वर्ष 1905 के अंत में चिदंबरम पिल्लई ने मद्रास का दौरा किया और बाल गंगाधर तिलक तथा लाला लाजपत राय द्वारा शुरू किये गए स्वदेशी आंदोलन से जुड़े। अत: कथन 2 सही है।
  - चिदंबरम पिल्लई रामकृष्ण मिशन की ओर आकर्षित हुए और सुब्रमण्यम भारती तथा मांडयम परिवार के संपर्क में आए।
- तूतीकोरिन (वर्तमान थूथुकुडी) में चिदंबरम पिल्लई के आने तक तिरुनेलवेली ज़िले में स्वदेशी आंदोलन ने गति प्राप्त करना शुरू नहीं किया था।
- 1906 तक चिदंबरम पिल्लई ने स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कंपनी (एसएसएनसीओ) के नाम से एक स्वदेशी मर्चेंट शिपिंग संगठन स्थापित करने के लिये तूतीकोरिन और तिरुनेलवेली में व्यापारियों एवं उद्योगपतियों का समर्थन हासिल किया।

- उन्होंने स्वदेशी प्रचार सभा, धर्मसंग नेसावु सलाई, राष्ट्रीय गोदाम, मद्रास एग्रो-इंडस्ट्रियल सोसाइटी लिमिटेड और देसबीमना संगम जैसी कई संस्थाओं की स्थापना की।

- चिदंबरम पिल्लई और शिवा को उनके प्रयासों हेतु तिरुनेलवेली स्थित कई वकीलों द्वारा सहायता प्रदान की गई, जिन्होंने स्वदेशी संगम या 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक' नामक एक संगठन का गठन किया।
- तूतीकोरिन कोरल मिल्स की हड़ताल (1908) की शुरुआत के साथ राष्ट्रवादी आंदोलन ने एक द्वितीयक चरित्र प्राप्त कर लिया। अत: कथन 3 सही है।

39.

उत्तर: D

व्याख्या

- स्वामी विवेकानंद के विषय में
  - स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 को नरेंद्रनाथ दत्त के रूप में हुआ था।
    - प्रतिवर्ष स्वामी विवेकानंद की जयंती के अवसर पर 'राष्ट्रीय युवा दिवस' का आयोजन किया जाता है। अत: कथन 3 सही है।
    - वर्ष 1893 में खेतड़ी राज्य के महाराजा अजीत सिंह के अनुरोध पर उन्होंने 'विवेकानंद' की उपाधि धारण की।
  - उन्होंने दुनिया को वेदांत और योग के भारतीय दर्शन से परिचित कराया।
    - उन्होंने 'नव-वेदांत' (पश्चिमी दृष्टिकोण के माध्यम से हिंदू धर्म की व्याख्या) का प्रचार किया और भौतिक प्रगति के साथ आध्यात्मिकता के संयोजन में विश्वास किया। अत: कथन 2 सही है।
  - नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने विवेकानंद को "आधुनिक भारत का निर्माता" कहा था। अत: कथन 1 सही है।

40.

उत्तर: D

व्याख्या

- महाकवि सुब्रमण्यम भारती का जन्म 11 दिसंबर, 1882 को मद्रास प्रेसीडेंसी के 'एट्टायपुरम' में हुआ था।
- वे राष्ट्रवादी काल (1885-1920) के भारतीय लेखक थे, जिन्हें आधुनिक तमिल शैली का जनक माना जाता है।
  - उन्हें 'महाकवि भारथियार' के नाम से भी जाना जाता है।
  - सामाजिक न्याय को लेकर उनकी मज़बूत भावना ने उन्हें आत्मनिर्णय और सम्मान हेतु लड़ने के लिय प्रेरित किया।
- उनके साहित्यिक कार्यों में 'कण पाउ' (वर्ष 1917; कृष्ण के लिये गीत), 'पांचाली सपथम' (वर्ष 1912; पांचाली का व्रत), 'कुयिल पाउ' (वर्ष 1912; कुयिल का गीत), 'पुड़िया रूस' और 'ज्ञानारथम' (ज्ञान का रथ) आदि शामिल हैं। अत: विकल्प D सही है।
- उनकी कई अंग्रेज़ी कृतियों को 'अग्नि' और अन्य कविताओं तथा अनुवादों एवं निबंधों व अन्य गद्य अंशों (1937) में एकत्र किया गया था।

41.

उत्तर : C

व्याख्या :

- बंगाल स्कूल ऑफ पेंटिंग पुनर्जागरण विद्यालय या पुनरुद्धारवादी स्कूल (Renaissance School or the Revivalist School) भी कहा जाता है, क्योंकि यह भारतीय कला के पहले आधुनिक आंदोलन का प्रतिनिधित्व करता था।
  - इसने भारतीय कला के महत्त्व को पुन: पहचानने और सचेत रूप से अतीत की रचनाओं से प्रेरित एक वास्तविक भारतीय कला के रूप में इसे प्रस्तुत करने का प्रयास किया।
  - इसके अग्रणी कलाकार अबनींद्रनाथ टैगोर और प्रमुख सिद्धांतकार ई.बी. हैवेल, कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट के प्राचार्य थे। अत: कथन 1 सही है।
- इस नई प्रवृत्ति के कई चित्र मुख्य रूप से भारतीय पौराणिक कथाओं और सांस्कृतिक विरासत के विषयों पर केंद्रित हैं, वे भारत में आधुनिक कला संबंधी आंदोलन तथा कला इतिहासकारों के अध्ययन के लिये महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
  - स्वदेशी विषयों की उनकी अनूठी व्याख्या ने एक नई जागृति पैदा की और भारतीय कला के पुनरुद्धार की शुरुआत की। वह प्रतिष्ठित 'भारत माता' पेंटिंग के निर्माता थे। अत: कथन 2 सही है।

42.

उत्तर: B

व्याख्या:

- 8 अगस्त, 1942 को महात्मा गांधी ने ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का आह्वान किया और मुंबई में अखिल भारतीय कॉन्ग्रेस कमेटी के सत्र में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया। अत: कथन 2 सही नहीं है।
  - 8 अगस्त, 2021 को भारत ने भारत छोड़ो आंदोलन के 79 वर्ष पूरे किये, जिसे अगस्त क्रांति भी कहा जाता है। अत: कथन 1 सही है।
- गांधीजी ने ग्वालिया टैंक मैदान में अपने भाषण में "करो या मरो" का आह्वान किया, जिसे अब अगस्त क्रांति मैदान के नाम से जाना जाता है।

- स्वतंत्रता आंदोलन की 'ग्रैंड ओल्ड लेडी' के रूप में लोकप्रिय अरुणा आसफ अली को भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मुंबई के ग्वालिया टैंक मैदान में भारतीय ध्वज फहराने के लिये जाना जाता है।
- 'भारत छोड़ो' का नारा एक समाजवादी और ट्रेड यूनियनवादी यूसुफ मेहरली द्वारा गढ़ा गया था, जिन्होंने मुंबई के मेयर के रूप में भी काम किया था।
  - मेहरअली ने "साइमन गो बैक" का नारा भी गढ़ा था। अत: कथन 3 सही नहीं है।

43.

उत्तर: B

व्याख्या:

जयप्रकाश नारायण: स्वतंत्रता के बाद की भूमिका

- वर्ष 1952 में उन्होंने प्रजा सोशलिस्ट पार्टी (PSP) का गठन किया।
- राजनीति से असंतुष्ट होकर उन्होंने वर्ष 1954 में घोषणा की कि वे अपना जीवन भूदान आंदोलन के लिये समर्पित करेंगे जिसकी स्थापना विनोबा भावे ने की थी।
- वर्ष 1959 में उन्होंने गाँव, ज़िला, राज्य एवं संघ परिषदों के चार स्तरीय पदानुक्रम के माध्यम से 'भारतीय राजनीति के पुनर्निर्माण' की अवधारणा प्रस्तुत की।
- जब इंदिरा गांधी को इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा चुनावी कानूनों का उल्लंघन करने का दोषी पाया गया था तो जयप्रकाश नारायण ने इंदिरा गांधी एवं राज्यों के मुख्यमंत्रियों पर इस्तीफा देने का दबाव बनाया तथा सेना एवं पुलिस से असंवैधानिक और अनैतिक आदेशों की अवहेलना करने का आग्रह किया। वर्ष 1974 में उन्होंने सामाजिक परिवर्तन के लिये एक कार्यक्रम की वकालत की जिसे उन्होंने सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार के खिलाफ संपूर्ण क्रांति करार दिया।
  - संपूर्ण क्रांति: संपूर्ण क्रांति सात क्रांतियों (राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैचारिक या बौद्धिक, शैक्षिक एवं आध्यात्मिक) का एक संयोजन है। अत: विकल्प B सही है।

44.

उत्तर: D

व्याख्या:

- मप्पिला नाम मलयाली भाषी मुसलमानों को दिया गया है जो उत्तरी केरल के मालाबार तट पर निवास करते हैं। अत: कथन 1 सही है।
- वर्ष 1921 तक मोपला ने मालाबार में सबसे बड़े और सबसे तेज़ी से बढ़ते समुदाय का गठन किया। मालाबार की एक मिलियन की कुल आबादी में मोपला 32% के साथ दक्षिण मालाबार क्षेत्र में केंद्रित थे।
- मुस्लिम धर्मगुरुओं के उग्र भाषणों और ब्रिटिश विरोधी भावनाओं से प्रेरित होकर मप्पिलास ने एक हिंसक विद्रोह शुरू किया। साथ ही कई हिंसक घटनाओं की सूचना दी गई तथा ब्रिटिश एवं हिंदू ज़मींदारों दोनों के खिलाफ उत्पीड़न की शिकायत की गई थी।
- विद्रोह के कारण
  - असहयोग और खिलाफत आंदोलन: विद्रोह का ट्रिगर का कारण 1920 में कॉन्ग्रेस द्वारा खिलाफत आंदोलन के साथ शुरू किये गए असहयोग आंदोलन था।
  - इन आंदोलनों से प्रेरित ब्रिटिश विरोधी भावना ने मुस्लिम मप्पिलास को प्रभावित किया। अत: कथन 2 सही है।
  - नए काश्तकार कानून: 1799 में चौथे एंग्लो-मैसूर युद्ध में टीपू सुल्तान की मृत्यु के बाद मालाबार मद्रास प्रेसीडेंसी के हिस्से के रूप में ब्रिटिश अधिकार में आ गया था।
    - अंग्रेज़ों ने नए काश्तकारी कानून पेश किये थे, जो ज़मींदारों के नाम से पहचाने जाने वाले ज़मींदारों के पक्ष में थे और किसानों के लिये पहले की तुलना में कहीं अधिक शोषणकारी व्यवस्था थी।
    - नए कानूनों ने किसानों को भूमि के सभी गारंटीकृत अधिकारों से वंचित कर उन्हें भूमिहीन बना दिया। अत: कथन 2 सही है।
    - नवंबर 1921 में 67 मोपला कैदी मारे गए थे, जब उन्हें तिरूर से पोदनूर की केंद्रीय जेल में एक बंद माल डिब्बे में ले जाया जा रहा था जिसमें दम घुटने से इनकी मौत हो गई। इस घटना को वैगन ट्रैज़डी कहा जाता है। अत: कथन 3 सही है।

45.

उत्तर: D

व्याख्या:

जलियांवाला बाग घटना के बाद की स्थिति:

- गोलीबारी के बाद पंजाब में मार्शल लॉ की घोषणा कर दी गई जिसमें सार्वजनिक स्टाल पर कोड़े लगाना और अन्य प्रकार से अपमानित करना शामिल था। गोलीबारी और उसके बाद की ब्रिटिश कार्रवाइयों की खबर पूरे उपमहाद्वीप में फैलते ही भारतीय नागरिकों में आक्रोश फैल गया। अत: कथन 1 सही है।
- इस घटना के विरोध में बांग्ला कवि और नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने वर्ष 1915 में प्राप्त नाइटहुड की उपाधि का त्याग कर दिया।
- महात्मा गांधी ने बोअर युद्ध (दक्षिण अफ्रीकी युद्ध 1899-1902) के दौरान किये गए अपने कार्य के लिये अंग्रेज़ों द्वारा दी गई कैसर-ए-हिंद की उपाधि को त्याग दिया। अत: कथन 2 सही है।

- उस समय वायसराय की कार्यकारी परिषद में एकमात्र भारतीय प्रतिनिधि चेट्टूर शंकरन नायर (1857-1934) ने विरोध में अपने पद से इस्तीफा दे दिया। अत: कथन 3 सही है।
  - उस समय लॉर्ड चेम्सफोर्ड वायसराय थे।
- इस नरसंहार की जाँच के लिये 14 अक्तूबर, 1919 को एक जाँच समिति का गठन किया गया था। बाद में इसे अध्यक्ष लॉर्ड विलियम हंटर के नाम पर हंटर आयोग के रूप में जाना जाने लगा। इसमें भारतीय सदस्य भी शामिल थे।
- 1920 में हंटर आयोग ने जनरल डायर द्वारा किये गए उसके कार्यों की निंदा की और उसे ब्रिगेड कमांडर के पद से त्यागपत्र देने का निर्देश दिया।
- भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस ने अपनी स्वयं की गैर-आधिकारिक समिति नियुक्त की और उसे जाँच करने के लिये कहा, इसमें शामिल थे- मोतीलाल नेहरू, सी.आर. दास, अब्बास तैयबजी, एम.आर. जयकर और गांधीजी।
- गांधीजी ने जल्द ही अपना पहला बड़े पैमाने पर और निरंतर अहिंसक विरोध (सत्याग्रह) अभियान, असहयोग आंदोलन (1920–22) का आयोजन शुरू किया, जो 25 वर्ष बाद भारत से ब्रिटिश शासन को समाप्त करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित हुआ। अत: कथन 4 सही है।

46.

उत्तर: C

व्याख्या:

- अबनींद्रनाथ टैगोर का जन्म 07 अगस्त, 1871 को ब्रिटिश भारत के कलकत्ता के जोरासांको (Jorasanko) के में टैगोर परिवार में हुआ था।
  - वह रवींद्रनाथ टैगोर के भतीजे थे।
  - उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में, कला के क्षेत्र में एक नए आन्दोलन का जन्म हुआ, जिसे शुरूआती प्रोत्साहन भारत में बढ़ते राष्ट्रवाद से प्राप्त हुआ।
  - वह यकीनन एक कलात्मक भाषा के पहले प्रमुख प्रतिपादक थे जिन्होंने औपनिवेशिक शासन के तहत कला के पश्चिमी मॉडलों के प्रभाव का मुकाबला करने के लिये मुगल और राजपूत शैलियों का आधुनिकीकरण करने की मांग की थी। अत: कथन 2 सही है।
  - यद्यपि इस नई प्रवृत्ति के कई चित्र मुख्य रूप से भारतीय पौराणिक कथाओं और सांस्कृतिक विरासत के विषयों पर केंद्रित हैं, वे भारत में आधुनिक कला संबंधी आंदोलन तथा कला इतिहासकारों के अध्ययन के लिये महत्वपूर्ण स्रोत हैं। अत: कथन 1 सही है।
  - स्वदेशी विषयों की उनकी अनूठी व्याख्या ने एक नई जागृति पैदा की और भारतीय कला के पुनरुद्धार की शुरुआत की।
  - वह प्रतिष्ठित 'भारत माता' पेंटिंग के निर्माता थे।

47.

उत्तर: B

व्याख्या

- भारत छोड़ो आंदोलन
  - 8 अगस्त, 1942 को महात्मा गांधी ने ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का आह्वान किया और मुंबई में अखिल भारतीय कॉन्ग्रेस कमेटी के सत्र में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया।
  - गांधीजी ने ग्वालिया टैंक मैदान में अपने भाषण में "करो या मरो" का आह्वान किया, जिसे अब अगस्त क्रांति मैदान के नाम से जाना जाता है।
  - आंदोलन को अंग्रेज़ों द्वारा हिंसक रूप से दबा दिया गया, लोगों पर गोलियाँ चलाई गईं, लाठीचार्ज किया गया, गाँवों को जला दिया गया और भारी जुर्माना लगाया गया।
  - मुस्लिम लीग, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और हिंदू महासभा ने आंदोलन का समर्थन नहीं किया। भारतीय नौकरशाही ने भी इस आंदोलन का समर्थन नहीं किया। अत: कथन 1 सही है।
  - महिलाओं की भागीदारी: आंदोलन में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उषा मेहता जैसी महिला नेताओं ने एक भूमिगत रेडियो स्टेशन स्थापित करने में मदद की जिससे आंदोलन के बारे में जागरूकता पैदा हुई। अत: कथन 2 सही नहीं है।

48.

उत्तर: D

व्याख्या

- मज़दूर आंदोलन में सबसे महत्त्वपूर्ण विकास कार्य बाल गंगाधर तिलक और लाला लाजपत राय के नेतृत्व में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कॉन्ग्रेस का गठन था। अत: कथन 1 सही है।
  - तब से मज़दूर वर्ग का आंदोलन मज़बूत हुआ और वर्ष 1930 के बाद से आंदोलन में एक वैचारिक स्वर जुड़ गया।
- श्रम से जुड़े कई लोगों ने महसूस किया कि पूरे भारत में ट्रेड यूनियनों के कार्यों के समन्वय के लिये श्रम के एक केंद्रीय संगठन की आवश्यकता है।
  - वर्ष 1919 में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के गठन ने इसके लिये उत्प्रेरक का काम किया।
    - AITUC से चुने गए सदस्यों ने ILO में भारतीय श्रम का प्रतिनिधित्व किया।

- बाल गंगाधर तिलक, एनएम जोशी, बीपी वाडिया, दीवान चमनलाल, लाला लाजपत राय और जोसेफ बैप्टिस्टा एटक के गठन के पीछे मुख्य नेता थे।
  - लाला लाजपत राय एटक के पहले अध्यक्ष और जोसेफ बैप्टिस्टा इसके उपाध्यक्ष बने। अत: कथन 2 सही नहीं है।
- शुरुआत में एटक ब्रिटिश लेबर पार्टी के सामाजिक लोकतांत्रिक विचारों से प्रभावित था। अत: कथन 3 सही है।
  - अहिंसा, ट्रस्टीशिप और वर्ग-सहयोग के गांधीवादी दर्शन का एटक पर बहुत प्रभाव था।

49.

उत्तर: C

व्याख्या:

- स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 को हुआ और उनके बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था।
  - प्रत्येक वर्ष स्वामी विवेकानंद की जयंती (12 जनवरी) को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाई जाती है। अत: कथन 3 सही है।
  - वर्ष 1893 में खेतड़ी राज्य के महाराजा अजीत सिंह के अनुरोध पर उन्होंने 'विवेकानंद' नाम अपनाया।
- उन्होंने विश्व को वेदांत और योग के भारतीय दर्शन से परिचित कराया। अत: कथन 2 सही नहीं है।
  - उन्होंने 'नव-वेदांत' का प्रचार किया, एक पश्चिमी धारा के माध्यम से हिंदू धर्म की व्याख्या और भौतिक प्रगति के साथ आध्यात्मिकता के संयोजन में विश्वास किया।
- उन्हें वर्ष 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद में दिये गए उनके भाषण के लिये जाना जाता है।
  - सांसारिक सुख और मोह से मोक्ष प्राप्त करने के चार मार्गों का वर्णन उन्होंने अपनी पुस्तकों (राजयोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग) में किया है।
  - नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने विवेकानंद को "आधुनिक भारत का निर्माता" कहा था। अत: कथन 1 सही है।

50.

उत्तर: B

व्याख्या

- सर चेट्टूर शंकरन नायर को सामाजिक सुधारों के प्रबल समर्थक और भारत के आत्मनिर्णय में दृढ़ विश्वास हेतु जाना जाता है।
  - वे मद्रास उच्च न्यायालय में एक प्रशंसित वकील और न्यायाधीश थे।
- ये वर्ष 1885 में गठित भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस (Indian National Congress- INC) के शुरुआती निर्माताओं में से एक थे।
  - वर्ष 1885 में कॉन्ग्रेस पार्टी के इतिहास में वे सबसे कम उम्र के अध्यक्ष बने और इस पद को संभालने वाले एकमात्र मलयाली थे[।
- वर्ष 1902 में लॉर्ड कर्ज़न (Lord Curzon) ने उन्हें रैले विश्वविद्यालय आयोग का सदस्य नियुक्त किया।
- वर्ष 1904 में ब्रिटेन की महारानी द्वारा इन्हें कम्पैनियन ऑफ द इंडियन एम्पायर (Companion of The Indian Empire) के रूप में नियुक्त किया गया था तथा वर्ष 1912 में उन्हें नाइटहुड की उपाधि दी गई थी।
- वर्ष 1908 में उन्हें मद्रास उच्च न्यायालय में स्थायी न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया था।
- वर्ष 1915 में वे वायसराय की परिषद का हिस्सा बने, जिसे शिक्षा विभाग का प्रभारी बनाया गया था।
  - वर्ष 1919 में वायसराय की कार्यकारी परिषद में शामिल होकर उन्होंने मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों (Montagu-Chelmsford reforms) में प्रावधानों के विस्तार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। अत: कथन 2 सही है।
- जलियाँवाला बाग नरसंहार (13 अप्रैल, 1919) के पश्चात् सर चेट्टूर शंकरन नायर ने विरोध स्वरूप वायसराय की परिषद से इस्तीफा दे दिया था। अत: कथन 1 सही नहीं है।
  - उनके इस्तीफे ने ब्रिटिश सरकार को झकझोर कर रख दिया था और इस इस्तीफे के तुरंत बाद पंजाब में प्रेस सेंसरशिप हटा दी गई तथा मार्शल लॉ समाप्त कर दिया गया।
  - इसके अलावा पंजाब में गड़बड़ी की जाँच के लिये लॉर्ड विलियम हंटर की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था।

51.

उत्तर: A

व्याख्या:

- द्वितीय विश्व युद्ध वर्ष 1939-45 के बीच होने वाला एक सशस्त्र विश्वव्यापी संघर्ष था।
  - जर्मनी द्वारा 1 सितंबर, 1939 को पोलैंड पर आक्रमण के दो दिन बाद ब्रिटेन और फ्राँस ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। इस घटना ने द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत की।
  - यह इतिहास का सबसे बड़ा संघर्ष था जो लगभग छह वर्षों तक चला था।

- मरने वालों में अधिकांश साधारण नागरिक थे, जिनमें 6 मिलियन यहूदी भी शामिल थे, जो युद्ध के दौरान नाजी बंदी शिविरों में मारे गए थे।

- प्रतिद्वंद्वी गुट:
  - धुरी शक्तियाँ- जर्मनी, इटली और जापान।
  - मित्र राष्ट्र- फ्राँस, ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ और कुछ हद तक चीन। अत: कथन 1 सही है।
- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारतीय सेना सबसे बड़ी स्वयंसेवी शक्ति थी, जिसमें 2.5 मिलियन (20 लाख से अधिक) भारतीयों ने भाग लिया था।
  - इन सैनिकों ने मित्र राष्ट्रों के हिस्से के रूप में धुरी शक्तियों (जर्मनी, इटली और जापान) से लड़ाई लड़ी। अत: कथन 2 सही नहीं है।

52.

उत्तर: (C)

व्याख्या:

- लॉर्ड वेलेजली ने वर्ष 1798 में भारत में सहायक संधि प्रणाली की शुरुआत की, जिसके तहत सहयोगी भारतीय राज्य के शासकों को अपने शत्रुओं के विरुद्ध अंग्रेज़ों से सुरक्षा प्राप्त करने के बदले ब्रिटिश सेना के रखरखाव के लिये आर्थिक भुगतान करने को बाध्य किया गया था। अत: कथन 1 सही नहीं है।
- सहायक संधि करने वाले देशी राजा अथवा शासक किसी अन्य राज्य के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने या अंग्रेज़ों की सहमति के बिना समझौते करने के लिये स्वतंत्र नहीं थे।
- यह संधि राज्य के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति थी, लेकिन इसका पालन अंग्रेज़ों ने कभी नहीं किया।
- मनमाने ढंग से निर्धारित एवं भारी-भरकम आर्थिक भुगतान ने राज्यों की अर्थव्यवस्था को नष्ट कर दिया एवं राज्यों के लोगों को गरीब बना दिया।
  - वहीं ब्रिटिश अब भारतीय राज्यों के व्यय पर एक बड़ी सेना रख सकते थे।
- वे संरक्षित सहयोगी की रक्षा एवं विदेशी संबंधों को नियंत्रित करते थे तथा उनकी भूमि पर शक्तिशाली सैन्य बल की तैनाती करते थे। अत: कथन 3 सही है।
- लॉर्ड वेलेजली ने वर्ष 1798 में हैदराबाद के निजाम के साथ पहली सहायक संधि की। अत: कथन 2 सही नहीं है।
  - वर्ष 1801 में अवध के नवाब को इस संधि पर हस्ताक्षर करने के लिये मज़बूर किया गया।
  - पेशवा बाजीराव द्वितीय ने वर्ष 1802 में सहायक संधि पर हस्ताक्षर किये।

53.

उत्तर: B

व्याख्या:

- अपने मुनाफे को बढ़ाने के लिये यूरोपीय बागान मालिकों ने किसानों को खाद्य फसलों के बजाय नील की खेती करने के लिये बाध्य किया।
  - व्यापारियों और बिचौलियों के कारण किसानों को नुकसान उठाना पड़ा। परिणामस्वरूप उन्होंने बंगाल में नील की खेती न करने के लिये एक आंदोलन शुरू किया।
- उन्हें प्रेस और मिशनरियों का समर्थन प्राप्त था।
  - बंगाली पत्रकार हरीश चंद्र मुखर्जी ने अपने अखबार 'द हिंदू पैट्रियट' में बंगाल के किसानों की दुर्दशा का वर्णन किया।
  - बंगाली लेखक और नाटककार दीनबंधु मित्रा ने अपने नाटक 'नील दर्पण' में नील की खेती करने वालों भारतीय किसानों के साथ किये जाने वाले व्यवहार का मार्मिक प्रस्तुतिकरण किया है। यह पहली बार वर्ष 1860 में प्रकाशित हुआ था।
    - उनके नाटक ने एक बड़ा विवाद खड़ा कर दिया जिसे बाद में ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीयों के बीच आंदोलन को नियंत्रित करने के लिये प्रतिबंधित कर दिया था।
  - आर.सी. दत्त और सुरेंद्रनाथ बनर्जी पूर्वी बंगाल में पाबना आंदोलन से जुड़े थे। अत: विकल्प B सही है।

54.

उत्तर: D

व्याख्या:

- बंकिम चंद्र चटर्जी भारत के महान उपन्यासकारों और कवियों में से एक थे।
- उन्होंने संस्कृत में वंदे मातरम गीत की रचना की जिसने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लोगों के लिये प्रेरणास्रोत का कार्य किया।
- उनका महाकाव्य उपन्यास आनंदमठ, संन्यासी विद्रोह (1770-1820) की पृष्ठभूमि से प्रभावित था।
  - भारत को अपना राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम आनंदमठ से मिला।
- उन्होंने वर्ष 1872 में एक मासिक साहित्यिक पत्रिका, बंगदर्शन की भी शुरुआत की, जिसके माध्यम से बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय को एक बंगाली पहचान और राष्ट्रवाद के उद्भव को प्रभावित करने का श्रेय दिया जाता है।
  - 1880 के दशक के अंत में पत्रिका का प्रकाशन बंद कर दिया गया परंतु वर्ष 1901 में रवींद्रनाथ टैगोर के संपादक बनने के बाद इसे फिर से शुरू किया गया।

- अन्य साहित्यिक योगदान:
  - उन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया था और वह इस विषय में बहुत रुचि रखते थे, लेकिन बाद में बंगाली भाषा को जनता की भाषा बनाने की ज़िम्मेदारी ली। हालाँकि उनका पहला प्रकाशित काम एक उपन्यास है जो अंग्रेज़ी में था।
  - उनके प्रसिद्ध उपन्यासों में कपालकुंडला (Kapalkundala) 1866, देवी चौधुरानी (Debi Choudhurani), बिशाब्रीक्षा (द पॉइज़न ट्री), चंद्रशेखर (1877), राजमोहन की पत्नी और कृष्णकांतर विल शामिल हैं। अत: विकल्प D सही है।

55.

उत्तर: C

व्याख्या:

- संन्यासी विद्रोह बंगाल में वर्ष 1770-1820 के बीच हुआ था। बंगाल में वर्ष 1770 के भीषण अकाल के बाद संन्यासी विद्रोह शुरू हुआ जिससे घोर अराजकता और दुर्दशा उत्पन्न हुई। अत: कथन 1 सही है।
- हालाँकि विद्रोह का तात्कालिक कारण हिंदुओं और मुसलमानों दोनों के पवित्र स्थानों हेतु जाने वाले तीर्थयात्रियों पर अंग्रेज़ो द्वारा लगाए गए प्रतिबंध थे।
- बंकिम चंद्र चटर्जी का महाकाव्य उपन्यास आनंदमठ, संन्यासी विद्रोह (1770-1820) की पृष्ठभूमि से प्रभावित था, जब बंगाल अकाल का सामना कर रहा था तो बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय को बंगाली पुनर्जागरण पर एक प्रभावशाली व्यक्ति बना दिया। अत: कथन 2 सही है।

56.

उत्तर: B

व्याख्या:

- स्वदेशी आंदोलन की जड़ें विभाजन विरोधी आंदोलन में थीं जो लॉर्ड कर्जन के बंगाल प्रांत को विभाजित करने के फैसले का विरोध करने के लिये शुरू किया गया था।
  - बंगाल के अन्यायपूर्ण विभाजन को लागू होने से रोकने के लिये सरकार पर दबाव बनाने के लिये नरमपंथियों द्वारा विभाजन विरोधी अभियान शुरू किया गया था।
- विभाजन के कारण बंगाल में विरोध सभाएँ हुईं, जिसके तहत सबसे पहले विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का संकल्प लिया गया।
  - अगस्त 1905 में कलकत्ता के टाउनहॉल में एक विशाल बैठक आयोजित की गई और स्वदेशी आंदोलन की औपचारिक घोषणा की गई।
  - वर्ष 1906 में कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में INC ने स्वशासन या स्वराज को कांग्रेस का लक्ष्य घोषित किया। अत: विकल्प C सही
- नरमपंथियों के असफल प्रयासों के बाद वर्ष 1905 से 1908 के बाद बंगाल में स्वदेशी आंदोलन पर चरमपंथियों, कट्टरपंथियों या गरम दल का प्रमुख रूप से प्रभाव पड़ा।
  - लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल (लाल-बाल-पाल) इस कट्टरपंथी समूह के महत्त्वपूर्ण नेता थे। अत: विकल्प B सही है।
- लार्ड हार्डिंग ने वर्ष 1911 में बंगाल के विभाजन को मुख्य रूप से क्रांतिकारी उग्रवाद पर अंकुश लगाने के लिये रद्द कर दिया था।

57.

उत्तर: C

व्याख्या:

- रवींद्रनाथ टैगोर के बारे में माना जाता है कि उन्होंने 2000 से अधिक गीतों की रचना की है और उनके गीतों और संगीत को 'रबींद्र संगीत' (Rabindra Sangeet) कहा जाता है।
- उन्हें बंगाली गद्य और कविता के आधुनिकीकरण हेतु उत्तरदायी माना जाता है। उनकी उल्लेखनीय कृतियों में गीतांजलि, घारे-बैर, गोरा, मानसी, बालका, सोनार तोरी आदि शामिल हैं, साथ ही उन्हें उनके गीत 'एकला चलो रे' (Ekla Chalo Re) के लिये भी याद किया जाता है।
  - उन्होंने अपनी शुरूआती कविताएँ 'भानुसिम्हा' (Bhanusimha) उपनाम से 16 वर्ष की आयु में प्रकाशित की थीं।
- उन्होंने न केवल, भारत और बांग्लादेश हेतु राष्ट्रगान की रचना की बल्कि श्रीलंका के राष्ट्रगान को कलमबद्ध करने और उसकी रचना करने हेतु एक श्रीलंकाई छात्र को प्रेरित किया।
  - अपनी सभी साहित्यिक उपलब्धियों के अलावा वे एक दार्शनिक और शिक्षाविद भी थे, जिन्होंने वर्ष 1921 में विश्व-भारती विश्वविद्यालय (Vishwa-Bharati University) की स्थापना की जिसने पारंपरिक शिक्षा को चुनौती दी। अत: कथन 1 सही है।
- रवींद्रनाथ टैगोर को उनकी काव्यरचना गीतांजलि के लिये वर्ष 1913 में साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार दिया गया था।
  - यह पुरस्कार जीतने वाले वह पहले गैर-यूरोपीय थे। अत: कथन 2 सही है।

- 1915 में उन्हें ब्रिटिश किंग जॉर्ज पंचम (British King George V) द्वारा नाइटहुड की उपाधि से सम्मानित किया गया। वर्ष 1919 में जलियाँवाला बाग हत्याकांड (Jallianwala Bagh Massacre) के बाद उन्होंने नाइटहुड की उपाधि का त्याग कर दिया। अत: कथन 3 सही नहीं है।

58.

उत्तर: D

व्याख्या:

- गोपाल कृष्ण गोखले एक महान समाज सुधारक और शिक्षाविद् थे। जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को अनुकरणीय नेतृत्व प्रदान किया।
- वर्ष 1899 से 1902 के बीच वह 'बॉम्बे लेजिस्लेटिव काउंसिल' के सदस्य रहे और वर्ष 1902 से 1915 तक उन्होंने इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल में काम किया। अत: कथन 1 सही है।
  - इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल में काम करने के दौरान गोखले ने वर्ष 1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधारों को तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- वह भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस (INC) के नरम दल से जुड़े थे (वर्ष1889 में शामिल)। बनारस अधिवेशन, 1905 में वह INC के अध्यक्ष बने।
  - यह वह समय था जब 'नरम दल' और लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक तथा अन्य के नेतृत्त्व वाले 'गरम दल' के बीच व्यापक मतभेद पैदा हो गए थे। वर्ष 1907 के सूरत अधिवेशन में ये दोनों गुट अलग हो गए।
  - वैचारिक मतभेद के बावजूद वर्ष 1907 में उन्होंने लाला लाजपत राय की रिहाई के लिये अभियान चलाया, जिन्हें अंग्रेज़ों द्वारा म्याँमार की मांडले जेल में कैद किया गया था।
- संबंधित सोसाइटी तथा अन्य कार्य:
  - भारतीय शिक्षा के विस्तार के लिये वर्ष 1905 में उन्होंने सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी (Servants of India Society) की स्थापना की। अत: कथन 2 सही है।
  - वह महादेव गोविंद रानाडे द्वारा शुरू की गई 'सार्वजनिक सभा पत्रिका' से भी जुड़े थे।
  - वर्ष 1908 में गोखले ने 'रानाडे इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनॉमिक्स' की स्थापना की।
  - उन्होंने अंग्रेज़ी साप्ताहिक समाचार पत्र 'द हितवाद' की शुरुआत की।
- गांधी के लिये गुरु के रूप में:
  - एक उदार राष्ट्रवादी के रूप में महात्मा गांधी ने उन्हें राजनीतिक गुरु माना था। अत: कथन 3 सही है।
  - महात्मा गांधी ने गुजराती भाषा में गोपाल कृष्ण गोखले को समर्पित एक पुस्तक 'धर्मात्मा गोखले' लिखी।

59.

उत्तर: B

व्याख्या:

- विनायक दामोदर सावरकर (वीर सावरकर) एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिज्ञ, वकील और लेखक थे।
  - उन्हें स्वातंत्र्यवीर सावरकर (Swatantryaveer Savarkar) के नाम से भी जाना जाता है।
- इन्होंने अभिनव भारत सोसाइटी नामक एक भूमिगत सोसाइटी (Secret Society) की स्थापना की।
  - सावरकर यूनाइटेड किंगडम गए और इंडिया हाउस (India House) तथा फ्री इंडिया सोसाइटी (Free India Society) जैसे संगठनों से जुड़े।
  - वे वर्ष 1937 से 1943 तक हिंदू महासभा के अध्यक्ष रहे।
  - इसकी स्थापना श्यामजी किशन वर्मा ने वर्ष 1905 में लंदन में की थी।
  - इंडिया हाउस की स्थापना श्यामजी किशन वर्मा ने वर्ष 1905 में लंदन में की थी (न की वीर सावरकर ने)। अत: कथन 1 सही नहीं है।
- वर्ष 1909 में उन्हें मॉर्ले-मिंटो सुधार (भारतीय परिषद अधिनियम 1909) के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह की साजिश रचने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। अत: कथन 2 सही है।
  - 1910 में क्रांतिकारी समूह इंडिया हाउस के साथ संबंधों के लिये गिरफ्तार किया गया।
- सावरकर ने 'द हिस्ट्री ऑफ द वार ऑफ इंडियन इंडिपेंडेंस' नामक एक पुस्तक लिखी जिसमें उन्होंने 1857 के सिपाही विद्रोह में इस्तेमाल किये गए छापामार युद्ध (Guerilla Warfare) के तरीकों (Tricks) के बारे में लिखा था। अत: कथन 3 सही है।
  - उन्होंने 'हिंदुत्व: हिंदू कौन है ?' पुस्तक भी लिखी।

60.

उत्तर: C

व्याख्या:

- यह शीत युद्ध (1945-1991) के दौरान ऐसे राज्यों के एक संगठन के रूप में गठित किया गया था, जो औपचारिक रूप से खुद को संयुक्त राज्य अमेरिका (पूंजीवाद) या सोवियत संघ (समाजवाद) के साथ संरेखित नहीं करना चाहते थे एवं स्वतंत्र या तटस्थ रहने की मांग करते थे। अत: कथन 1 सही है।
- यह वर्ष 1955 में आयोजित बांडुंग सम्मेलन था, जिसके परिणामस्वरूप गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के संस्थापक सिद्धांतों को अपनाया गया। अत: कथन 2 सही नहीं है।

- साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, नव-उपनिवेशवाद, जातिवाद आदि सभी रूपों के खिलाफ उनके संघर्ष में "राष्ट्रीय स्वतंत्रता, संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और गुटनिरपेक्ष देशों की सुरक्षा" सुनिश्चित करने के लिये निर्मित इस संगठन का उद्देश्य वर्ष 1979 की हवाना उद्घोषणा में बताया गया था।

- इस सम्मेलन का आयोजन यूगोस्लाविया के जोसिप ब्रोज़ टीटो, मिस्र के जमाल अब्देल नासिर, भारत के जवाहरलाल नेहरू, घाना के क्वामे नकरुमाह और इंडोनेशिया के सुकर्णो के नेतृत्व में आयोजित किया गया था। अत: कथन 3 सही है।

61.

उत्तर: C

व्याख्या:

- रवींद्रनाथ टैगोर के बारे में माना जाता है कि उन्होंने 2000 से अधिक गीतों की रचना की है और उनके गीतों और संगीत को 'रबींद्र संगीत' (Rabindra Sangeet) कहा जाता है।
- उन्हें बंगाली गद्य और कविता के आधुनिकीकरण हेतु उत्तरदायी माना जाता है। उनकी उल्लेखनीय कृतियों में गीतांजलि, घारे-बैर, गोरा, मानसी, बालका, सोनार तोरी आदि शामिल हैं, साथ ही उन्हें उनके गीत 'एकला चलो रे' (Ekla Chalo Re) के लिये भी याद किया जाता है।
  - उन्होंने अपनी शुरूआती कविताएँ 'भानुसिम्हा' (Bhanu-simha) उपनाम से 16 वर्ष की आयु में प्रकाशित की थीं।
- उन्होंने न केवल, भारत और बांग्लादेश हेतु राष्ट्रगान की रचना की बल्कि श्रीलंका के राष्ट्रगान को कलमबद्ध करने और उसकी रचना करने हेतु एक श्रीलंकाई छात्र को प्रेरित किया।
  - अपनी सभी साहित्यिक उपलब्धियों के अलावा वे एक दार्शनिक और शिक्षाविद भी थे, जिन्होंने वर्ष 1921 में विश्व-भारती विश्वविद्यालय (Vishwa-Bharati University) की स्थापना की जिसने पारंपरिक शिक्षा को चुनौती दी। अत: कथन 1 सही है।
- रवींद्रनाथ टैगोर को उनकी काव्यरचना गीतांजलि के लिये वर्ष 1913 में साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार दिया गया था।
  - यह पुरस्कार जीतने वाले वह पहले गैर-यूरोपीय थे। अत: कथन 2 सही है।
- 1915 में उन्हें ब्रिटिश किंग जॉर्ज पंचम (British King George V) द्वारा नाइटहुड की उपाधि से सम्मानित किया गया। वर्ष 1919 में जलियाँवाला बाग हत्याकांड (Jallianwala Bagh Massacre) के बाद उन्होंने नाइटहुड की उपाधि का त्याग कर दिया। अत: कथन 3 सही नहीं है।

62.

उत्तर: A

व्याख्या:

- मॉर्ले-मिंटो सुधार 1909 के द्वारा भारत सचिव की परिषद, वायसराय की कार्यकारी परिषद तथा बंबई और मद्रास की कार्यकारी परिषदों में भारतीयों को शामिल गया। विधान परिषदों में मुस्लिमों हेतु अलग निर्वाचक मंडल की बात की गई। अत: कथन 1 सही है।
- केंद्रीय और प्रांतीय विधान परिषदों के आकार में वृद्धि की गई।
  - इस अधिनियम ने इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल में सदस्यों की संख्या 16 से बढ़ाकर 60 कर दी।
- केंद्र और प्रांतों में विधान परिषदों के सदस्यों की चार श्रेणियाँ थी जो इस प्रकार है:
  - पदेन सदस्य: गवर्नर-जनरल और कार्यकारी परिषद के सदस्य।
  - मनोनीत सरकारी सदस्य: सरकारी अधिकारी जिन्हें गवर्नर-जनरल द्वारा नामित किया गया था।
  - मनोनीत गैर-सरकारी सदस्य: ये गवर्नर-जनरल द्वारा नामित थे लेकिन सरकारी अधिकारी नहीं थे।
  - निर्वाचित सदस्य: विभिन्न वर्गों से चुने हुए भारतीय।
    - निर्वाचित सदस्यों को अप्रत्यक्ष रूप से चुना जाना था।
- भारतीयों को पहली बार इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल (Imperial Legislative Council) की सदस्यता प्रदान की गई।
  - मुसलमानों हेतु पृथक निर्वाचक मंडल की बात की गई। अत: कथन 2 सही है।
- कुछ निर्वाचन क्षेत्र मुस्लिमों हेतु निश्चित किये गये जहाँ केवल मुस्लिम समुदाय के लोग ही अपने प्रतिनिधियों के लिये मतदान कर सकते थे।

सत्येंद्र पी. सिन्हा वायसराय की कार्यकारी परिषद में नियुक्त होने वाले पहले भारतीय सदस्य थे। अत: कथन 3 सही नहीं है।

63.

उत्तर: C

व्याख्या:

- लॉर्ड कर्जन एक ब्रिटिश राजनीतिज्ञ और विदेश सचिव था जिसने अपने कार्यकाल के दौरान ब्रिटिश नीति निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाई।
  - लॉर्ड कर्जन ने लॉर्ड एल्गिन का स्थान लिया और वर्ष 1899 से1905 के बीच भारत के वायसराय के रूप में कार्य किया।
  - वह 39 वर्ष की आयु में भारत का सबसे कम उम्र का वायसराय बना। अत: कथन 1 सही है।

- कर्जन एक मजबूत केंद्रीकृत सरकार और शक्तिशाली नौकरशाही में विश्वास करता था। उसने कई सुधारों की शुरुआत की जैसे:
  - कर्जन ने नमक-कर की दर को ढाई रुपए प्रति मन (एक मन लगभग 37 किलो के बराबर) से घटाकर एक और एक तिहाई रुपए प्रति मन कर दिया था।
  - 500 रुपए से अधिक वार्षिक आय वाले लोग कर चुकाते थे साथ ही आयकर दाताओं को भी छूट प्रदान की जाती थी।
- वर्ष 1905 में अविभाजित बंगाल प्रेसीडेंसी का विभाजन लॉर्ड कर्जन के सबसे आलोचनात्मक कदमों में से एक था, जिसने पूरे भारत में व्यापक विरोध को शुरू किया और स्वतंत्रता आंदोलन को गति दी। अत: कथन 3 सही नहीं है।
  - स्वदेशी आंदोलन बंगाल के विभाजन का परिणाम था।
  - इस विभाजन के लगातार विरोध के कारण वर्ष 1911 में लॉर्ड हार्डिंग द्वारा विभाजन के फैसले को उलट दिया गया था।

64.

उत्तर: D

व्याख्या:

- लगभग 8 करोड़ लोगों की आबादी के साथ बंगाल भारत का सबसे अधिक आबादी वाला प्रांत था।
  - इसमें वर्तमान पश्चिम बंगाल, बिहार, छत्तीसगढ़, ओडिशा और असम के कुछ हिस्से तथा वर्तमान बांग्लादेश शामिल थे। अत: कथन 1 सही है।
- वर्ष 1905 में अविभाजित बंगाल प्रेसीडेंसी का विभाजन लॉर्ड कर्जन के सबसे आलोचनात्मक कदमों में से एक था, जिसने पूरे भारत में व्यापक विरोध को शुरू किया और स्वतंत्रता आंदोलन को गति दी।
  - 3.1 करोड़ की आबादी तथा 3:2 के मुस्लिम-हिंदू अनुपात के साथ, पूर्वी बंगाल और असम के एक नए प्रांत की घोषणा की गई।
  - पश्चिमी बंगाल प्रांत हिंदू बाहुल्य था।
- विभाजन का प्रभाव: विभाजन ने पूरे भारत में भारी आक्रोश और शत्रुता को जन्म दिया। कॉन्ग्रेस के सभी वर्गों, नरमपंथियों और कट्टरपंथियों ने इसका विरोध किया।
  - इस निर्णय की विरोध में जो संघर्ष सामने आया, वह स्वदेशी आंदोलन के रूप में जाना जाने लगा। यह आंदोलन बंगाल में सबसे मज़बूत था, लेकिन अन्य जगहों पर भी इसकी गूंज थी; उदाहरण के लिये डेल्टाई आंध्र में, इसे वंदेमातरम आंदोलन के रूप में जाना जाता था। अत: कथन 2 सही है।
  - रवींद्रनाथ टैगोर ने कई स्थानों पर मार्च का नेतृत्व किया और कई देशभक्ति गीतों की रचना की, इन गीतों में 'आमार सोनार बांग्ला' सबसे प्रसिद्ध है तथा वर्तमान में बांग्लादेश का राष्ट्रगान है। अत: कथन 3 सही है।
    - जात्रा या लोकप्रिय थिएटरों मेंदेशभक्ति और बंगाली राष्ट्रवाद का संदेश प्रदर्शित किया गया था।

65.

उत्तर: A

व्याख्या:

- गुरु तेग बहादुर का जन्म 1 अप्रैल, 1621 को अमृतसर में हुआ था। उनके पिता का नाम गुरु हरगोबिंद और माता का नाम नानकी था।
  - गुरु हरगोबिंद छठे सिख गुरु थे।
- गुरु तेग बहादुर सिख धर्म के दस गुरुओं में नौवें थे।
  - उन्हें 'हिंद दी चादर' के रूप में भी याद किया जाता है। अत: कथन 1 सही है जबकि कथन 2 सही नहीं है।
- गुरु तेग बहादुर ने औरंगजेब के शासन के दौरान गैर-मुसलमानों के जबरन धर्म परिवर्तन का विरोध किया था
- वर्ष 1675 में मुगल बादशाह औरंगजेब के आदेश पर दिल्ली में सार्वजनिक रूप से उनकी हत्या कर दी गई थी
  - दिल्ली में गुरुद्वारा सीस गंज साहिब और गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब उनके मृत्युदंड दिये जाने और दाह संस्कार के स्थल हैं।
- गुरु तेग बहादुर का गुरु के रूप में कार्यकाल 1665 से 1675 तक चला।
- गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु तेग बहादुर के एक सौ पंद्रह सूक्त हैं।
- गुरु तेग बहादुर को लोगों की निस्वार्थ सेवा के लिये याद किया जाता है। उन्होंने पहले सिख गुरु- गुरु नानक की शिक्षाओं के साथ देश भर में यात्रा की।
- गुरु तेग बहादुर जहाँ भी गए वहाँ उन्होंने स्थानीय लोगों के लिये सामुदायिक रसोई और कुएँ स्थापित किये।
- आनंदपुर साहिब की स्थापना गुरु तेग बहादुर आंदोलन के परिणामस्वरूप की गई थी।

66.

उत्तर: D

व्याख्या:

- ज्योतिराव फुले एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्त्ता, विचारक, जातिप्रथा-विरोधी समाज सुधारक और महाराष्ट्र के लेखक थे। उन्हें ज्योतिबा फुले के नाम से भी जाना जाता है।
- उनकी विचारधारा स्वतंत्रता, समतावाद और समाजवाद पर आधारित थी। अत: कथन 1 सही है।
  - फुले थॉमस पाइन की पुस्तक 'द राइट्स ऑफ मैन' से प्रभावित थे और उनका मानना था कि सामाजिक बुराइयों का मुकाबला करने का एकमात्र जरिया महिलाओं निम्न वर्ग के लोगों को शिक्षा देना था।

- फुले ने अपने अनुयायियों के साथ मिलकर वर्ष 1873 में सत्यशोधक समाज का गठन किया, जिसका अर्थ था सत्य के साधक 'ताकि महाराष्ट्र में निम्न वर्गों को समान सामाजिक और आर्थिक लाभ प्राप्त हो सके। अत: कथन 2 सही है।
- 11 मई, 1888 को महाराष्ट्र के सामाजिक कार्यकर्त्ता विट्ठलराव कृष्णजी वांडेकर द्वारा उन्हें 'महात्मा' की उपाधि से सम्मानित किया गया। अत: कथन 3 सही है।

67.

उत्तर: B

व्याख्या:

- जलियाँवाला बाग हत्याकांड की जाँच के लिये 14 अक्तूबर, 1919 को भारत सरकार ने डिसऑर्डर इन्क्वायरी कमेटी (Disorders Inquiry Committee) के गठन की घोषणा की।
- यह समिति लॉर्ड विलियम हंटर की अध्यक्षता के चलते उनके नाम पर हंटर कमीशन (Hunter Commission) के नाम से जानी जाती है। इसमें भारतीय सदस्य भी थे। अत: विकल्प B सही है।

68.

उत्तर: D

व्याख्या:

- डॉ. अंबेडकर एक समाज सुधारक, न्यायविद, अर्थशास्त्री, लेखक, बहुभाषाविद (कई भाषाओं के जानकर), विद्वान और विभिन्न धर्मों के विचारक थे।
- डॉ. अंबेडकर द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ निम्नलिखित हैं:
  - मूकनायक (1920)
  - बहिष्कृत भारत' (1927)
  - समता (1929)
  - जनता (1930)
- पुस्तकें:
  - जाति प्रथा का विनाश
  - बुद्ध या कार्ल मार्क्स
  - अछूत: वे कौन थे और अछूत कैसे बन गए
  - बुद्ध और उनके धम्म
  - हिंदू महिलाओं का उदय और पतन अत: विकल्प D सही है।

69.

उत्तर: A

व्याख्या:

- बंगाल, मुगल साम्राज्य का सबसे उपजाऊ तथा समृद्ध प्रांत था इसमें वर्तमान बांग्लादेश, बिहार तथा ओडिशा राज्य शामिल थे। अत: कथन 1 सही है।
  - प्रांत की आधिकारिक शक्तियां बंगाल के नवाब में निहित थीं।
  - बंगाल अपने प्रसिद्ध वस्त्रों, रेशम और शोरे के कारण आर्थिक रूप से महत्त्वपूर्ण था।
- बंगाल अपने विशाल संसाधनों के कारण अंग्रेज़ों के लिये बेहद महत्त्वपूर्ण था क्योंकि इन संसाधनों ने ब्रिटिश विस्तार के वित्तपोषण में आवश्यक भूमिका निभाई।
  - ब्रिटिशों द्वारा एशिया से किये जाने वाले आयात का लगभग 60% हिस्सा बंगाल से आता था।
- बंगाल प्रांत पर नियंत्रण स्थापित करने के लिये, 1757 में बंगाल के नवाब सिराज-उद-दौला तथा रॉबर्ट क्लाइव के नेतृत्व वाली ब्रिटिश सेना के बीच प्लासी का युद्ध लड़ा गया। अत: कथन 2 सही नहीं है।
  - बंगाल के नवाब मीर कासिम तथा ब्रिटिश जनरल हेक्टर मुनरो के बीच बक्सर का युद्ध हुआ था।
- प्लासी का युद्ध अंग्रेज़ों की जीत के साथ समाप्त हुआ और उन्होंने मीर कासिम (सिराज-उद-दौला का दामाद) को सिंहासन बैठाया।
  - बक्सर का युद्ध मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय और अवध के नवाब शुजा-उद-दौला के साथ अंग्रेज़ों द्वारा हस्ताक्षरित इलाहाबाद की संधि के साथ समाप्त हुआ। अत: कथन 3 सही नहीं है।

70.

उत्तर: D

व्याख्या:

- बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर का जन्म वर्ष 1891 में महू, मध्य प्रांत (अब मध्य प्रदेश) में हुआ था।
  - उन्हें भारतीय संविधान के पिता (Father of the Indian Constitution) के रूप में जाना जाता है और वह भारत के पहले कानून मंत्री थे।
  - वह संविधान निर्माण की मसौदा समिति के अध्यक्ष (Chairman of the Drafting Committee) थे।
  - वह एक प्रसिद्ध राजनेता थे जिन्होंने दलितों और अन्य सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के अधिकारों के लिये लड़ाई लड़ी।
- उन्होंने मार्च 1927 में उन हिंदुओं के खिलाफ महाड़ सत्याग्रह (Mahad Satyagraha) का नेतृत्व किया जो नगरपालिका बोर्ड के फैसले का विरोध कर रहे थे।
  - 1926 में म्युनिसिपल बोर्ड ऑफ महाड़ (महाराष्ट्र) ने सभी समुदायों हेतु तालाबों का उपयोग करने से संबंधित आदेश पारित किया। इससे पहले अछूतों को महाड़ में तालाब के पानी का उपयोग करने की अनुमति नहीं थी।

- उन्होंने तीनों गोलमेज सम्मेलनों (Round Table Conferences) में भाग लिया। अत: कथन 1 सही है।
- वर्ष 1932 में डॉ. अंबेडकर ने महात्मा गांधी के साथ पूना समझौते पर हस्ताक्षर किये, जिससे इन्होंने दलित वर्गों (सामुदायिक पंचाट) हेतु पृथक निर्वाचन मंडल की मांग के विचार को छोड़ दिया। अत: कथन 2 सही है।
  - हालाँकि प्रांतीय विधानमंडलों में दलित वर्गों के लिये सुरक्षित सीटों की संख्या 71 से बढ़ाकर 147 कर दी गई तथा केंद्रित विधानमंडल (Central Legislature) में दलित वर्गों की सुरक्षित सीटों की संख्या में 18 प्रतिशत की वृद्धि की गई।
- हिल्टन यंग कमीशन (Hilton Young Commission) के समक्ष प्रस्तुत इनके विचारों ने भारतीय रिज़र्व बैंक (Reserve Bank of India- RBI) की नींव रखने का कार्य किया।
- डॉ. भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व में स्थापित संगठन:
  - बहिष्कृत हितकारिणी सभा (1923)
  - इंडिपेन्डेंट लेबर पार्टी/स्वतंत्र मज़दूर पार्टी (1936)
  - अनुसूचित जाति फेडरेशन (1942)

71.

उत्तर: D

व्याख्या:

- प्रथम गोलमेज सम्मेलन का आयोजन 12 नवंबर, 1930 को लंदन में किया गया था लेकिन कॉन्ग्रेस ने इसमें भाग नहीं लिया था।
  - मार्च, 1931 में महात्मा गांधी और लॉर्ड इरविन (भारत का वायसराय 1926-31) के मध्य गांधी-इरविन समझौता (Gandhi-Irwin Pact) संपन्न हुआ। इसमें कॉन्ग्रेस द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन को समाप्त करने तथा द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने पर सहमति दी गई। अत: कथन 1 सही नहीं है।
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन 7 सितंबर, 1931 को लंदन में हुआ।
- समय-समय पर नियुक्त विभिन्न उप-समितियों की रिपोर्टों पर विचार करने हेतु 17 नवंबर, 1932 को लंदन में तीसरे गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी परिणति अंतत: भारत शासन अधिनियम, 1935 के रूप में हुई।
  - कॉन्ग्रेस ने तीसरे गोलमेज़ सम्मेलन में भाग नहीं लिया क्योंकि कॉन्ग्रेस के अधिकांश प्रमुख नेता उस समय जेल में थे। अत: कथन 2 सही नहीं है।

72.

उत्तर : C

व्याख्या :

- जगजीवन राम, जिन्हें बाबूजी के नाम से जाना जाता है, एक राष्ट्रीय नेता, स्वतंत्रता सेनानी, सामाजिक न्याय हेतु लड़ाई लड़ने वाले योद्धा, वंचित वर्गों के हिमायती तथा एक उत्कृष्ट सांसद थे।
- वर्ष 1931 में वह भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस (कॉन्ग्रेस पार्टी) के सदस्य बन गए।
- उन्होंने वर्ष 1934-35 में अखिल भारतीय शोषित वर्ग लीग (All India Depressed Classes League) की नींव रखने में अहम योगदान दिया था। यह संगठन अछूतों को समानता का अधिकार दिलाने हेतु समर्पित था। अत: कथन 1 सही है।
  - वह सामाजिक समानता और शोषित वर्गों के लिये समान अधिकारों के प्रणेता थे।
- वर्ष 1935 में उन्होंने हिंदू महासभा के एक सत्र में प्रस्ताव रखा कि पीने के पानी के कुएँ और मंदिर अछूतों के लिये खुले रखे जाएँ।
- वर्ष 1935 में बाबूजी राँची में हैमोंड आयोग के समक्ष भी उपस्थित हुए और पहली बार दलितों के लिये मतदान के अधिकार की मांग की ।
- उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और इससे जुड़ी राजनीतिक गतिविधियों के लिये 1940 के दशक में उन्हें दो बार जेल जाना पड़ा। अत: कथन 2 सही है।

73.

उत्तर: B

व्याख्या:

- बिजयानंद पटनायक का जन्म 5 मार्च 1916 को हुआ था। वह बीजू पटनायक के नाम से लोकप्रिय थे।
  - वह एक अच्छे पायलट थे। वर्ष 1936 में रॉयल इंडियन एयर फोर्स में शामिल हो गए।
  - वह दो बार ओडिशा के मुख्यमंत्री रहे।
    - आरके षणमुखम चेट्टी, एक वकील, अर्थशास्त्री और राजनीतिज्ञ, स्वतंत्र भारत के पहले वित्त मंत्री थे। अत: कथन 2 सही नहीं है।
- बीजू पटनायक ने वर्ष 1942 में एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की। वे भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिये महात्मा गांधी के मार्गदर्शन में भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल हुए।
  - वे भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिये महात्मा गांधी के मार्गदर्शन में भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल हुए। अत: कथन 1 सही है।

- पंडित जवाहरलाल नेहरू के अनुरोध पर बीजू पटनायक ने जावा के लिये उड़ान भरी और दिल्ली में एक बैठक के लिये 'सुल्तान शहरयार' (Sutan Sjahrir) को इंडोनेशिया के डच नियंत्रित क्षेत्र से बाहर लाए।
  - बहादुरी के इस कार्य के लिये उन्हें इंडोनेशिया में मानद नागरिकता दी गई और उन्हें 'भूमि पुत्र' उपाधि से सम्मानित किया गया।
  - वर्ष 1996 में बीजू पटनायक को सर्वोच्च इंडोनेशियाई राष्ट्रीय पुरस्कार, 'बंटांग जसा उटमा' से सम्मानित किया गया था। अत: कथन 3 सही है।

74.

उत्तर: (D)

व्याख्या

- शेख मुजीबुर रहमान एक बंगाली नेता थे, जो बांग्लादेश के पहले प्रधानमंत्री (1972-75) बने और वर्ष 1975 में वहाँ के राष्ट्रपति बने। अत: कथन 1 सही है।
  - उन्हें 'बंगबंधु' के नाम से जाना जाता था। वे बांग्लादेश के 'जतिर पिता' अर्थात् 'राष्ट्रपिता' के रूप में भी जाने जाते हैं।
- उन्होंने अपने औपचारिक राजनीतिक जीवन की शुरुआत वर्ष 1949 में अवामी लीग के सह-संस्थापक के रूप में की थी।
  - उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) के लिये राजनीतिक स्वायत्तता की वकालत की और यही हिस्सा आगे चलकर बांग्लादेश के रूप में अस्तित्व में आया। अत: कथन 2 सही है।
- उन्हें गांधी शांति पुरस्कार, 2020 के लिये चुना गया है, क्योंकि उन्होंने अहिंसक और अन्य गांधीवादी तरीकों के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तन लाने में उत्कृष्ट योगदान दिया था। अत: कथन 3 सही है।

75.

उत्तर: C

व्याख्या:

- भगत सिंह एक ऐसी पीढ़ी से ताल्लुक रखते थे जो भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दो निर्णायक चरणों में हस्तक्षेप करती थी- पहला लाल-बाल-पाल के 'अतिवाद' का चरण और दूसरा अहिंसक सामूहिक कार्रवाई का गांधीवादी चरण।
- वर्ष 1924 में वह कानपुर में सचींद्रनाथ सान्याल द्वारा एक वर्ष पहले शुरू किये गए 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' (Hindustan Republican Association) के सदस्य बने। एसोसिएशन के मुख्य आयोजक चंद्रशेखर आज़ाद थे और भगत सिंह उनके बहुत करीबी थे। अत: कथन 1 सही है।
- वर्ष 1925 में भगत सिंह लाहौर लौट आए और अगले एक वर्ष के भीतर उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर 'नौजवान भारत सभा' नामक एक उग्रवादी युवा संगठन का गठन किया। अत: कथन 2 सही है।
- वर्ष 1928 में भगत सिंह ने हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का नाम बदलकर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन (HSRA) कर दिया। वर्ष 1930 में जब आज़ाद को गोली मारी गई, तो उनके साथ ही HSRA भी समाप्त हो गया और नौजवान भारत सभा ने पंजाब में HSRA का स्थान ले लिया।

76.

उत्तर (c)

व्याख्या:

- वर्ष 1934 में लोहिया भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस (Indian National Congress) के अंदर एक वामपंथी समूह कॉन्ग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (Congress Socialist Party-CSP) में सक्रिय रूप से शामिल हो गए। अत: कथन 1 सही है।
- उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध (1939-45) में ग्रेट ब्रिटेन द्वारा भारत को शामिल करने के निर्णय का विरोध किया और वर्ष 1939 तथा वर्ष 1940 में ब्रिटिश विरोधी टिप्पणी करने के लिये गिरफ्तार किया गया।
- 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी द्वारा भारत में ब्रिटिश शासन को समाप्त करने के लिये एक स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया गया। लोहिया ने अन्य CSP नेताओं (जैसे कि जय प्रकाश नारायण) के साथ भूमिगत रहकर भारत छोड़ो आंदोलन के लिये समर्थन जुटाया। ऐसी प्रतिरोधी गतिविधियों के लिये उन्हें 1944-46 में फिर से जेल में डाल दिया गया। अत: कथन 2 सही है।

77.

उत्तर: A

व्याख्या:

- चौरी चौरा (Chauri Chaura) कांड के सौ वर्ष पूरे होने के अवसर पर प्रधानमंत्री द्वारा एक डाक टिकट जारी किया गया है।
- चौरी चौरा, उत्तर प्रदेश के गोरखपुर ज़िले में स्थित एक कस्बा है। इस कस्बे में 4 फरवरी, 1922 को एक हिंसक घटना घटित हुई थी। किसानों की भीड़ ने यहाँ के एक पुलिस स्टेशन में आग लगा दी जिसके कारण 22 पुलिस कर्मियों की मौत हो गई। इस घटना को देखकर महात्मा गांधी (Mahatma Gandhi) ने असहयोग आंदोलन (Non-Cooperation Movement- 1920-22) को वापस ले लिया। अत: विकल्प A सही है।
- गांधीजी ने असहयोग आंदोलन में हिंसा का प्रवेश देख इसे रोकने का फैसला किया। उन्होंने अपनी इच्छा 'कॉन्ग्रेस वर्किंग कमेटी' को बताई और 12 फरवरी, 1922 को यह आंदोलन औपचारिक रूप से वापस ले लिया गया।

78.

उत्तर: C

व्याख्या:

- वर्ष 1907 में पगड़ी संभाल आंदोलन शुरू करने वाले अजीत सिंह की स्मृति में संयुक्त किसान मोर्चा (SKM) ने 23 फरवरी, 2021 को पगड़ी संभाल दिवस के रूप में मनाया।
- यह एक सफल किसान आंदोलन था जिसने वर्ष 1907 में ब्रिटिश सरकार को कृषि से संबंधित तीन कानूनों को रद्द करने के लिये विवश किया।
- इसमें पंजाब भूमि अलगाव अधिनियम (Punjab Land Alienation Act) 1900, पंजाब भूमि उपनिवेशीकरण अधिनियम (Punjab Land Colonisation Act) 1906 और दोआब बारी अधिनियम (Doab Bari Act) 1907 शामिल थे।
- इन अधिनियमों के चलते किसान भूमि के मालिक न रहकर भूमि के ठेकेदार/अनुबंधक बन जाते और यदि किसान अनुमति लिये बिना अपने खेत में एक भी पौधा छू लेता तो ब्रिटिश सरकार को यह अधिकार था कि वह उस किसान को आवंटित भूमि वापस ले सकती थी। अत: कथन 1 सही है।
- इस आंदोलन के प्रमुख नेतृत्वकर्त्ता भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह थे जिन्होंने कृषि कानूनों से नाराज़ किसानों को संगठित करने का कार्य किया।
- भगत सिंह के पिता किशन सिंह और चाचा अजीत सिंह ने अपने क्रांतिकारी मित्र घसीटा राम के साथ मिलकर भारत माता सोसाइटी (Bharat Mata Society) का गठन किया। इस सोसाइटी का उद्देश्य किसानों में व्याप्त नाराज़गी को ब्रिटिश सरकार के खिलाफ एक आंदोलन का रूप देना तथा इसका उद्देश्य इस आंदोलन के माध्यम से ब्रिटिश सरकार को गिराना था। अत: कथन 2 सही है।

79.

उत्तर: D

व्याख्या:

- केरल सरकार द्वारा फेक न्यूज़ के खतरे से निपटने के लिये 'सत्यमेव जयते' नामक एक डिजिटल मीडिया साक्षरता कार्यक्रम की घोषणा किया गया है।
- सत्यमेव जयते (सत्य की सदैव विजय होती है) हिंदू धर्मग्रंथ मुण्डक उपनिषद के एक मंत्र का हिस्सा है। अत: कथन 2 सही है।
- स्वतंत्रता के बाद इसे 26 जनवरी, 1950 को भारत के राष्ट्रीय आदर्श वाक्य के रूप में अपनाया गया था। अत: कथन 1 सही है।
- यह भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश के वाराणसी के निकट स्थित सारनाथ में मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बनवाए गए सिंह स्तम्भ पर देवनागरी लिपि में अंकित है और भारतीय राष्ट्रीय प्रतीक का एक अभिन्न अंग है। अत: कथन 3 सही है।
- प्रतीक और शब्द "सत्यमेव जयते" सभी भारतीय मुद्रा और राष्ट्रीय दस्तावेज़ों के एक तरफ अंकित है।

80.

उत्तर: C

व्याख्या:

राष्ट्रीय युवा दिवस 2022:

- स्वामी विवेकानंद की जयंती को हर वर्ष 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस (National Youth Day NYD) के रूप में आयोजित किया जाता है। अत: कथन 1 सही है।
  - वर्ष 1999 में संयुक्त राष्ट्र ने इस दिन को प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया।
- वर्ष 1984 में भारत सरकार ने पहली बार स्वामी विवेकानंद के जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। तभी से पूरे देश में इस दिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।
  - यह दिन उन युवाओं को संबोधित करने के लिये मनाया जाता है जो हमारे देश का भविष्य हैं और स्वामी विवेकानंद की जयंती मनाने के लिये जिन्होंने हमेशा देश के युवाओं को प्रेरित किया एवं देश के विकास में युवाओं के सही उपयोग के बारे में बात की।
- स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 को हुआ तथा उनके बचपन का नाम नरेंद्र नाथ दत्त था।
  - उन्होंने दुनिया को वेदांत और योग के भारतीय दर्शन से परिचित करवाया। वे 19वीं सदी के आध्यात्मिक गुरु एवं विचारक रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। अत: कथन 2 सही है।

81.

उत्तर: C

- भारत के उपराष्ट्रपति ने हाल ही में श्री नारायण गुरु (Sree Narayana Guru) की कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद, "नॉट मैनी, बट वन" (Not Many, But One) लॉन्च किया है।
- श्री नारायण गुरु का दर्शन:
  - श्री नारायण गुरु बहुमुखी प्रतिभा के धनी, महान महर्षि, अद्वैत वेदांत दर्शन के प्रबल प्रस्तावक, कवि और एक महान आध्यात्मिक व्यक्ति थे। अत: कथन 1 सही है।

- साहित्यिक रचनाएँ:
  - उन्होंने विभिन्न भाषाओं में अनेक पुस्तकें लिखीं। उनमें से कुछ प्रमुख हैं: अद्वैत दीपिका, असरमा, थिरुकुरल, थेवरप्पाथिंकंगल आदि।
- राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान:
  - वह एक उल्लेखनीय समाज सुधारक थे तथा मंदिरों में सभी के प्रवेश का समर्थन के लिये चलाए गए आंदोलनों में सबसे आगे थे और अछूतों के प्रति सामाजिक भेदभाव की विचारधारा के खिलाफ थे।
  - उन्होंने वायकोम आंदोलन के लिये प्रेरणा प्रदान की जिसका उद्देश्य त्रावणकोण के मंदिरों में निम्न जाति के लोगों मंदिरों में प्रवेश की अनुमति दिलाना था। अत: कथन 2 सही है।
  - उन्होंने अपनी कविताओं में भारतीयता के सार को जोड़ा, जिसने विश्व की स्पष्ट विविधता के तहत एकता को उजागर किया।

82.

उत्तर: D

व्याख्या:

- केंद्र सरकार ने 23 जनवरी के दिन नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती को 'पराक्रम दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया है।
- उन्होंने बिना शर्त स्वराज (Unqualified Swaraj) अर्थात् स्वतंत्रता का समर्थन किया और मोतीलाल नेहरू रिपोर्ट का विरोध किया जिसमें भारत के लिये डोमिनियन (अधिराज्य) के दर्जे की बात कही गई थी। अत: कथन 1 सही है।
- उन्होंने वर्ष 1930 के नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया और वर्ष 1931 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के निलंबन तथा गांधी-इरविन समझौते पर हस्ताक्षर करने का विरोध किया। अत: कथन 2 सही है।
- बोस ने वर्ष 1938 में हरिपुरा में कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष का चुनाव जीता। अत: कथन 3 सही है।
- इसके पश्चात् वर्ष 1939 में उन्होंने त्रिपुरी में गांधी जी द्वारा समर्थित उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैय्या के विरुद्ध पुन: अध्यक्ष पद का चुनाव जीता।

83.

उत्तर: (C)

व्याख्या

- हाल ही में प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी गोविंद बल्लभ पंत की प्रतिमा का अनावरण नई दिल्ली के पंडित पंत मार्ग पर किया गया है।
  - यह मूर्ति पहले रायसीना रोड सर्कल के पास स्थित थी, जिसे यहाँ से स्थानांतरित किया गया है क्योंकि यह 'नए संसद भवन' की संरचना के भीतर आ रही थी।
- गोविंद बल्लभ पंत दिसंबर 1921 में कॉन्ग्रेस में शामिल हुए और जल्द ही असहयोग आंदोलन का हिस्सा बन गए। वर्ष 1930 में गांधी जी के कार्यों से प्रेरित होकर 'नमक मार्च' का आयोजन करने के कारण उन्हें कैद कर लिया गया। अत: कथन 1 सही है।
  - सरकार में रहते हुए उन्होंने ज़मींदारी प्रथा को समाप्त करने के उद्देश्य से कई सुधार किये।
- उन्होंने देश भर में कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित किया और कुली-भिक्षुक कानून का भी विरोध किया, जिसके तहत कुली और भिक्षुकों को बिना किसी पारिश्रमिक के ब्रिटिश अधिकारियों का भारी सामान ढोने के लिये मज़बूर किया जाता था।
- गोविंद बल्लभ पंत सदैव अल्पसंख्यक समुदाय के लिये एक अलग निर्वाचक मंडल के खिलाफ रहे, वे मानते थे कि यह कदम समुदायों को विभाजित करेगा। अत: कथन 2 सही है।

84.

उत्तर: D

व्याख्या:

- लाला लाजपत राय भारत के महानतम स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे।उन्हें 'पंजाब केसरी' (Punjab Kesari) और 'पंजाब का शेर' (Lion of Punjab) नाम से भी जाना जाता था।
  - उन्होंने लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज से कानून की पढ़ाई की।
  - वे स्वामी दयानंद सरस्वती से प्रभावित होकर लाहौर में आर्य समाज (Arya Samaj) में शामिल हो गए।
- उनका विश्वास था कि हिंदू धर्म में आदर्शवाद, राष्ट्रवाद (Nationalism) के साथ मिलकर धर्मनिरपेक्ष राज्य (Secular State) की स्थापना करेगा।
- बिपिन चंद्र पाल और बाल गंगाधर तिलक के साथ मिलकर उन्होंने चरमपंथी नेताओं की एक तिकड़ी (लाल-बाल-पाल) बनाई।
- वे भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस (Indian National Congress- INC) में शामिल हो गए और पंजाब के कई राजनीतिक आंदोलनों में हिस्सा लिया।
- उन्होंने वर्ष 1917 में अमेरिका में होम रूल लीग ऑफ अमेरिका (Home Rule League of America) की स्थापना की और इसके द्वारा अमेरिका में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिये नैतिक समर्थन मांगा।
- उन्हें अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कॉन्ग्रेस (All India Trade Union Congress) का अध्यक्ष भी चुना गया था।
- उन्होंने वर्ष 1920 में कॉन्ग्रेस के नागपुर अधिवेशन में गांधी जी के असहयोग आंदोलन (Non-Cooperation Movement) का समर्थन किया।

- उन्होंने रौलेट एक्ट (Rowlatt Act) और उसके बाद होने वाले जलियांवाला बाग हत्याकांड (Jallianwala Bagh massacre) का विरोध किया।
- उन्हें वर्ष 1926 में केंद्रीय विधानसभा का उप नेता चुना गया।
- वर्ष 1928 में उन्होंने साइमन कमीशन के साथ सहयोग करने से इनकार करते हुए विधानसभा में एक प्रस्ताव रखा क्योंकि आयोग में किसी भी भारतीय सदस्य को शामिल नहीं किया गया था।
- उन्होंने अकाल पीड़ित लोगों की मदद करने और उन्हें मिशनरियों के चंगुल से बचाने के लिये वर्ष 1897 में हिंदू राहत आंदोलन (Hindu Relief Movement) की स्थापना की।
- उन्होंने वर्ष 1921 में सर्वेंट्स ऑफ पीपुल सोसाइटी (Servants of People Society) की स्थापना की।

अत: कथन D सही है।

85.

उत्तर: B

व्याख्या

तारापुर नरसंहार:

- 15 फरवरी, 1932 को युवा स्वतंत्रता सेनानियों के एक समूह ने तारापुर थाना भवन में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराने की योजना बनाई। अत: कथन 1 सही है।
- पुलिस को इस योजना की जानकारी थी और मौके पर कई अधिकारी मौजूद थे।
- 4,000 की भीड़ ने पुलिस पर पथराव किया, जिसमें नागरिक प्रशासन का एक अधिकारी घायल हो गया।
- पुलिस ने जवाबी कार्रवाई में भीड़ पर अंधाधुंध फायरिंग की। लगभग 75 राउंड फायरिंग के बाद मौके पर 34 शव मिले, हालाँकि इससे भी बड़ी संख्या में मौतों का दावा किया जा रहा था।
- मृतकों में से सिर्फ 13 लोगों की ही पहचान की गई।

विरोध की वजह:

- 23 मार्च, 1931 को लाहौर में भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फाँसी दिये जाने के कारण पूरे देश में शोक और आक्रोश की लहर दौड़ गई।
- गांधी-इरविन पैक्ट निरस्त होने के बाद महात्मा गांधी को वर्ष 1932 की शुरुआत में गिरफ्तार कर लिया गया था।
  - इस समझौते द्वारा गांधीजी ने लंदन में एक गोलमेज़ सम्मेलन (कॉन्ग्रेस ने पहले गोलमेज़ सम्मेलन का बहिष्कार किया था) में भाग लेने के लिये सहमति व्यक्त की और सरकार राजनीतिक कैदियों को रिहा करने पर सहमत हो गई।
- कॉन्ग्रेस को एक अवैध संगठन घोषित किया गया और नेहरू, पटेल तथा राजेंद्र प्रसाद को भी जेल में डाल दिया गया।
- मुंगेर में स्वतंत्रता सेनानी श्रीकृष्ण सिंह, नेमधारी सिंह, निरापद मुखर्जी, पंडित दशरथ झा, बासुकीनाथ राय, दीनानाथ सहाय और जयमंगल शास्त्री को गिरफ्तार किया गया था।
- कॉन्ग्रेस नेता सरदार शार्दुल सिंह कविश्वर द्वारा सरकारी भवनों पर तिरंगा फहराने का आह्वान तारापुर में गूँज उठा। अत: कथन 2 सही नहीं है।

86.

उत्तर: D

व्याख्या:

- वह एक भारतीय दार्शनिक, सामाजिक नेता और आर्य समाज के संस्थापक थे।
  - आर्य समाज वैदिक धर्म का एक सुधार आंदोलन है और वह वर्ष 1876 में "भारत भारतीयों के लिये" के रूप में स्वराज का आह्वान करने वाले पहले व्यक्ति थे। अत: कथन 1 सही है।
- उनके एक अखंड भारत के दृष्टिकोण में वर्गहीन और जातिविहीन समाज (धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर) तथा विदेशी शासन से मुक्त भारत शामिल था, जिसमें आर्य धर्म सभी का सामान्य धर्म हो।
- उन्होंने वेदों से प्रेरणा ली और उन्हें 'भारत के युग की चट्टान', 'हिंदू धर्म का अचूक और सच्चा मूल बीज' माना। उन्होंने "वेदों की ओर लौटो" का नारा दिया। अत: कथन 2 सही है।
- उन्होंने चतुर्वर्ण व्यवस्था की वैदिक धारणा प्रस्तुत की इसके अनुसार किसी भी व्यक्ति के वर्ण का निर्धारण उसकी जाति के अनुसार नहीं बल्कि उसके द्वारा पालन किये जाने वाले व्यवसाय के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र के रूप में पहचाना जाता था। अत: कथन 3 सही है।

87.

उत्तर: C

व्याख्या:

विनायक दामोदर सावरकर:

- जन्म: इनका जन्म 28 मई, 1883 को महाराष्ट्र के नासिक ज़िले के भागुर ग्राम में हुआ था।
- संबंधित संगठन और कार्य:
  - उन्होंने अभिनव भारत सोसाइटी नामक एक भूमिगत सोसाइटी (Secret Society) की स्थापना की।
  - सावरकर यूनाइटेड किंगडम गए और इंडिया हाउस (India House) तथा फ्री इंडिया सोसाइटी (Free India Society) जैसे संगठनों से जुड़े।

- वे वर्ष 1937 से 1943 तक हिंदू महासभा के अध्यक्ष रहे।
- सावरकर ने 'द हिस्ट्री ऑफ द वार ऑफ इंडियन इंडिपेंडेंस' नामक एक पुस्तक लिखी जिसमें उन्होंने 1857 के सिपाही विद्रोह में इस्तेमाल किये गए छापामार युद्ध (Guerilla Warfare) के तरीकों (Tricks) के बारे में लिखा था।
- उन्होंने 'हिंदुत्व: हिंदू कौन है?' पुस्तक भी लिखी।

- मुकदमे और सज़ा:
  - वर्ष 1909 में उन्हें मॉर्ले-मिंटो सुधार (भारतीय परिषद अधिनियम 1909) के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह की साजिश रचने के आरोप में गिरफ्तार किया गया।
  - 1910 में क्रांतिकारी समूह इंडिया हाउस के साथ संबंधों के लिये गिरफ्तार किया गया।
  - सावरकर पर एक आरोप नासिक के कलेक्टर जैक्सन की हत्या के लिये उकसाने का था और दूसरा भारतीय दंड संहिता 121-ए के तहत राजा (सम्राट) के खिलाफ साजिश रचने का था।
  - दोनों मुकदमों में सावरकर को दोषी ठहराया गया और 50 वर्ष के कारावास की सज़ा सुनाई गई, जिसे काला पानी भी कहा जाता है, उन्हें वर्ष 1911 में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में सेलुलर जेल ले जाया गया।
- मृत्यु : 26 फरवरी, 1966 को अपनी इच्छा से उपवास करने के कारण उनकी मृत्यु हो गई। अत: विकल्प C सही है।

88.

उत्तर: D

व्याख्या:

- पश्चिमी प्रभावों की प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप आर्य समाज सुधारवादी न होकर पुनरुत्थानवादी था।
- पहली आर्य समाज इकाई औपचारिक रूप से दयानंद सरस्वती द्वारा वर्ष 1875 में बॉम्बे में स्थापित की गई थी और बाद में इसका मुख्यालय लाहौर में स्थापित किया गया था। अत: कथन 1 सही है।
- इस आंदोलन का केंद्र दयानंद एंग्लो-वैदिक (डीएवी) स्कूल था जो पहली बार वर्ष 1886 में लाहौर में स्थापित किया गया था। इसने पश्चिमी शिक्षा के महत्त्व पर जोर देने की मांग की थी।
- आर्य समाज हिंदुओं में आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास जगाने में सक्षम था जिसने गोरों की श्रेष्ठता और पश्चिमी संस्कृति के मिथक को कमज़ोर करने में मदद की।
- आर्य समाज ने ईसाई और इस्लाम में धर्मान्तरित लोगों को हिंदू धर्म में वापस लाने के लिये शुद्धि आंदोलन शुरू किया। अत: कथन 2 सही है।
  - इससे 1920 के दशक के दौरान सामाजिक जीवन का सांप्रदायिकरण बढ़ा और बाद में यह सांप्रदायिक राजनीतिक चेतना में बदल गया।
- स्वामी दयानंद की मृत्यु के बाद उनके कार्यों को लाला हंसराज, पंडित गुरुदत्त, लाला लाजपत राय और स्वामी श्रद्धानंद ने आगे बढ़ाया। अत: कथन 3 सही है।
- स्वामी दयानंद के विचार उनकी प्रसिद्ध कृति सत्यार्थ प्रकाश (द ट्रू एक्सपोज़िशन) में प्रकाशित हुए थे।